बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

संस्कार उजाला
SANSKAR UJALA
www.sanskarujala.com
सच की हुंकार

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

संस्कार उजाला

sanskarujala@gmail.com
संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर
सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 171 | शनिवार 12 अक्टूबर 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

[सुविचार]

"जीवन में सब्र और मेहनत की जरूरत होती है, भाग्य खुद चलकर आता है।"

मोदी सरकार पर 10 सालों में एक भी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं: शाह

-डिजिटल अर्थव्यवस्था और रेलवे नेटवर्क का भी विस्तार हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार के खिलाफ पिछले दस सालों में भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा है। नीतिगत फैसले लेने में जो शिथिलता थी उसे भी खत्म कर दिया गया है और भारत को पांच कमजोर अर्थव्यवस्थाओं से बाहर निकालकर एक आकर्षक स्थान में बदला है। शाह ने यहां उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के सालाना सत्र में कहा कि 2047 तक मोदी सरकार की कई नीतियों के कारण भारत दुनिया के सर्वाधिक विकसित देशों में से एक बन कर उभरेगा।

उन्होंने कहा कि जब से पीएम मोदी ने 2014 से कार्यभार संभाला है, सरकार ने कई क्षेत्रों में सुधार किए हैं। इसके परिणामस्वरूप अन्य बातों के अलावा बुनियादी ढांचा बेहतर हुआ है। संपर्क सुविधा अच्छी हुई है, डिजिटल अर्थव्यवस्था और रेलवे नेटवर्क का भी विस्तार हुआ और सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रिक वाहन के लिए

विनिर्माण इकाइयों की स्थापना हुई है।

शाह ने विकसित भारत एट 2047 प्रगति के शिखर की ओर विषय पर आयोजित सत्र में कहा कि हम देश में सुधार और आर्थिक विकास लाए हैं। इस अवधि के दौरान, हमारी सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा है। इसे विपक्ष ने भी स्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि पिछले दस साल में मोदी सरकार ने आतंकवाद, वामपंथी उग्रवाद और पूर्वोत्तर उग्रवाद को जमीन के 200 गज नीचे दफना दिया है। उन्होंने कहा कि जब मोदी ने सत्ता संभाली थी, तो नीतिगत फैसले और क्रियान्वयन को लेकर शिथिलता की स्थिति थी जिसे बहुत ही कम समय में निर्णायक उपायों के साथ समाप्त किया गया। सरकार ने इसे प्रदर्शन की नीति से बदल दिया है। शाह ने कहा कि एक समय भारत को पांच सबसे कमजोर अर्थव्यवस्था की श्रेणी में रखा जाता था लेकिन मोदी सरकार ने देश को उस स्थिति से बाहर निकाला और अब अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष इसे आकर्षक स्थान कहता है।

शाह ने पिछले दस सालों में गरीबों के कल्याण के लिए शुरू की गई कई कल्याणकारी योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि मोदी सरकार 80 करोड़ लोगों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है। पांच करोड़ लोगों को मुफ्त आवास दिया गया है, 12 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं। 11 करोड़ लोगों को मुफ्त बिजली कनेक्शन और 15 करोड़ लोगों को पीने का पानी मिल रहा है। गृह मंत्री ने कहा कि भारत 50 करोड़ लोगों का बाजार था। बाकी 80 करोड़ लोग अपनी रोजी-रोटी कमाने में व्यस्त थे और उनके पास क्रय शक्ति नहीं थी। मोदी सरकार ने 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देकर उनकी ये समस्याएं खत्म कर दीं और भारत अब 130 करोड़ लोगों का बाजार है। शाह ने कहा कि अगले 25 साल में भारत विनिर्माण, सेमीकंडक्टर उद्योग, इलेक्ट्रिक वाहन, डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे सभी क्षेत्रों में वैश्विक अगुवा होगा और मोदी सरकार इस दिशा में ईमानदारी से काम कर रही है।

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करें।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:-9911733939

संक्षिप्त समाचार

इंडिगो की फ्लाइट में महिला से छेड़छाड़

नई दिल्ली। दिल्ली-चेन्नई इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट में एक महिला यात्री से छेड़छाड़ के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी की पहचान राजेश शर्मा के रूप में हुई है, जो पेशे से मार्बल टाइल बिछाने का काम करता है। राजेश को 9 अक्टूबर को चेन्नई एयरपोर्ट से लैंडिंग के बाद गिरफ्तार किया गया। पुलिस के मुताबिक महिला की शिकायत के बाद जांच की जा रही है। महिला ने बताया कि महिला चेन्नई लौट रही थी। प्लेन में उसके पीछे बैठे आरोपी ने उसे गलत तरीके से छुआ था। हालांकि इंडिगो एयरलाइंस ने इस घटना पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है।

असम में जेल से 5 कैदी भागे

मोरीगांव। असम के मोरीगांव की जिला जेल से शुक्रवार सुबह 5 अंडर ट्रायल कैदी भाग गए। मोरीगांव के जिला आयुक्त देवाशीष शर्मा के मुताबिक जेल से भागने की घटना देर रात एक से दो बजे के बीच हुई। सभी कैदी पाक्सों केस में आरोपी थे। उन्हें मोरीगांव और सोनितपुर जिलों से गिरफ्तार किया गया था। कैदियों ने कोठरी की लोहे की ग्रिल तोड़ दी और फिर चादर, कंबल और लुंगी का इस्तेमाल कर रस्सी बनाई और जेल की 20 फीट ऊंची चारदीवारी से भाग निकले। पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए सर्च ऑपरेशन चला रही है।

भू-माफिया से कब्जा मुक्त कराई 30 करोड़ की जमीन

नोएडा। नोएडा में बुलडोजर लगातार अपना काम कर रहा है। यहां बुलडोजर के जरिए ही भू माफिया पर नकेल कसी जा रही है। नोएडा प्राधिकरण ने प्राधिकरण सर्किल-8 और भू लेखा विभाग ने संयुक्त प्रयास से विशेष अभियान चलाया, जिसमें सलारपुर में खसरा संख्या-700 से 711 पर छह हजार वर्गमीटर जमीन को भू-माफिया के कब्जे से मुक्त कराया गया। बताया गया कि यहां पर निर्माण, नालियां और प्लाट काटने का काम किया जा रहा था। जबकि यह जमीन मास्टर प्लान 2031 के अनुसार नियोजित है, जिसकी कीमत करीब 30 करोड़ रुपये आंकी जा रही है। वहीं, वर्क सर्किल आठ वरिष्ठ प्रबंधक अनिल कुमार ने बताया कि शिकायत मिलने के बाद कागजी दस्तावेजों को खंगाला गया। जमीन प्राधिकरण की अर्जित और कब्जा प्राप्त जमीन है, जिस पर अवैध रूप से नाली बनाई जा रही थी। साथ ही जमीन पर प्लाट काटकर बेचने की कोशिश थी। उधर, जानकारी मिलते ही प्राधिकरण अधिकारियों ने नोटिस जारी कर भू-माफिया से स्वतः जमीन खाली करने को कहा। ऐसा नहीं करने पर बृहस्पतिवार दोपहर को प्राधिकरण टीम जेसीबी के साथ मौके पर पहुंची। यहां स्थानीय पुलिस बल की मदद से अवैध निर्माण को हटाया गया।

बिहार में दिल दहला देने वाली घटना : महिला वकील के घर में घुसकर उसे बेरहमी से पीटा

- महिला को निर्वस्त्र कर वीडियो बनाने लगे, विरोध किया तो मारपीट की

सहरसा । बिहार के सहरसा जिले से दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां अज्ञात बदमाशों ने एक महिला वकील के घर में घुसकर उसे बेरहमी से पीटा। इतना ही नहीं उसे निर्वस्त्र कर वीडियो बनाने की कोशिश की। फिलहाल घायल महिला को एक निजी नर्सिंग होम में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। जानकारी के अनुसार यह घटना सहरसा के सदर थाना क्षेत्र के बटराहा मोहल्ले की है। पीड़ित महिला वकील अपने घर में पूजा कर रही थीं। घटना के बारे में पीड़िता ने बताया कि सुबह लगभग 11 बजे जब वह घर पर पूजा कर रही थीं, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। इसके बाद दरवाजा खोलने पर चार युवक अंदर घुसे, जिनमें से एक ने चेहरा ढका हुआ था और बाकियों के चेहरे खुले थे। युवकों ने पिस्तौल तान दी और निर्वस्त्र कर वीडियो बनाने लगे। जब विरोध किया तो बदमाशों ने जमकर पिटाई की। मां ने बीच-बचाव करने की कोशिश की तो बदमाशों ने उन्हें भी पीटकर घायल कर दिया। पीड़िता का कहना है कि घटना के पीछे हाल ही में हुई एक बहस और विवाद का वजह हो सकती है। घटना से कुछ दिन पहले सुपौल में पदस्थापित सब इंस्पेक्टर नीलू कुमारी से बहस हो गई थी, जिसे लेकर विवाद बढ़ा था। महिला का आरोप है कि इस घटना के पीछे भी वही लोग हो सकते हैं। इस संबंध में पीड़ित महिला ने सहरसा के सदर थाने में इस मामले की शिकायत की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

राहुल गांधी से छिनेगा नेता प्रतिपक्ष का पद? बीजेपी ने कर दिया ऐसा दावा कि मच सकता है सियासी तूफान

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुक्रवार को भाजपा ने एक ऐसा दावा किया जिससे राजनीतिक चर्चा गर्म हो सकती है। दरअसल, भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज से इसको लेकर एक सवाल पूछा गया। पत्रकार का सवाल ये था कि ऐसी जानकारी मिल रही है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का जो पद है, उसको रोटेशनल करने की बात चल रही है? इसके जवाब में बांसुरी स्वराज ने कहा कि हां बिल्कुल। मैंने यह भी सुना है कि विपक्ष के नेता का पद रोटेशनल करने की बात चल रही है। लेकिन मैं विनम्रता से कहूंगी कि यह विपक्ष का आंतरिक मामला है।

भाजपा सांसद ने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि अगर उन्हें लगता है कि राहुल गांधी समर्पण के साथ अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं तो उन्हें इस तरह के फैसले पर आगे बढ़ना चाहिए। भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि विपक्षी दलों में कई नेता हैं जो विपक्ष के नेता (एलओपी) के काम को संभालने में 'सक्षम' हैं, लेकिन निर्णय लेना उन पर निर्भर है क्योंकि यह उनका 'आंतरिक मामला' है।

उन्होंने कहा कि हां, विपक्षी दलों में ऐसे कई नेता जरूर हैं जो नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी निभाने

में काफी सक्षम हैं। अगर भारतीय गठबंधन को लगता है कि राहुल गांधी अपनी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से नहीं निभा पा रहे हैं तो उन्हें ऐसा फैसला लेना चाहिए। हालांकि बीजेपी के दावे पर विपक्षी दलों की ओर से कोई बयान नहीं आया था, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि कम से कम 10 प्रतिशत सीटों के साथ विपक्ष में सबसे बड़ी पार्टी के केवल एक सांसद को ही नेता प्रतिपक्ष के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।

स्वराज ने अपनी बात जारी रखते हुए आगे कहा, ''विपक्ष के दलों में ऐसे कई नेता हैं जो नेता प्रतिपक्ष का कार्यभार संभालने के लिए काफी सक्षम हैं। अगर 'इंडिया' गठबंधन को यह लगता है कि राहुल गांधी पूरी कर्तव्यनिष्ठा से अपना पद नहीं संभाल पा रहे हैं तो यह निर्णय उन्हें लेना है।''

जेपी नड्डा ने कर दिया बड़ा दावा, बोले- महाराष्ट्र और झारखंड चुनावों में भी जीत हासिल करेगी बीजेपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा में जीत से गदगद भाजपा ने दावा किया है कि महाराष्ट्र और झारखंड में भी आगामी विधानसभा चुनावों में वह जीत हासिल करेगी। दरअसल, यह दावा किया और ने नहीं, बल्कि खुद भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने किया है। बिलासपुर में श्री नैना देवी मंदिर में मत्था टेकने और 'कंजक पूजन' करने वाले नड्डा ने कहा कि लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र की भाजपा सरकार के प्रदर्शन से खुश हैं।

नड्डा ने कहा कि आज मुझे शारदीय नवरात्रों में नवमी के दिन मां नैना देवी का आशीर्वाद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम सब लोग माता के आशीर्वाद से प्रधानमंत्री मोदी जी के विकसित भारत के सपने को पूरा करने में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ कार्य करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि पार्टी महाराष्ट्र और झारखंड में आगामी विधानसभा चुनावों में भी जीत हासिल करेगी। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हरियाणा में एक भ्रम पैदा किया गया है। जमीनी हकीकत कुछ और थी लेकिन माहौल कुछ और ही बना और आखिरकार बीजेपी चुनाव जीत गई और जम्मू-कश्मीर में वोट शेयर बढ़ गया।

उन्होंने कहा कि हरियाणा के लोगों- युवाओं, किसानों, महिलाओं और अन्य सभी वर्गों - ने विपक्षी दलों को करारा जवाब दिया और स्पष्ट कर दिया कि वे प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों और नेतृत्व में विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में छह से आठ प्रतिशत मतदान से लेकर 60 प्रतिशत से अधिक मतदान दिखाता है कि लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास करते हैं और

अनुच्छेद 370 को खत्म करने का समर्थन करते हैं।

नड्डा ने कहा कि आज आतंकवाद पर नियंत्रण है और बीजेपी का शासन सिर्फ सत्ता में बैठने के लिए नहीं बल्कि देश को सुरक्षित बनाने के लिए है. दुनिया में व्याप्त परिदृश्य का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मोदी ने कहा है कि यह युद्ध का नहीं बल्कि विकास का समय है और सभी को साथ लेकर चलना चाहिए। सत्तारूढ़ भाजपा ने हरियाणा में सत्ता बरकरार रखने और विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की वापसी की कोशिश को रोकने के लिए जीत की हैट्रिक बनाई। भाजपा ने जम्मू-कश्मीर में भी 90 में से 29 सीटें जीतकर उल्लेखनीय बढ़त हासिल की। नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन केंद्र शासित प्रदेश में सरकार बनाने के लिए तैयार है।

पंजाबी समाज के 13 विधायक विजयी होकर पहुचें हरियाणा विधानसभा : राजेश सलूजा

संस्कार उजाला
हरियाणा/ हिसार (गरिमा) : समाजसेवी एवं वरिष्ठ पत्रकार राजेश सलूजा ने बताया की हरियाणा विधानसभा में 33 साल बाद 13 पंजाबी विधायक जीते हैं। इस से पहले 1991 में कांग्रेस पार्टी से 14 पंजाबी विधायक जीते थे। इन 13 पंजाबी विधायको में 8 भाजपा से और 5 कांग्रेस से जीते है। दोनो मुख्य दलों ने 14 पंजाबियों को टिकट दी थी जिसमे से 13 विधायक विजयी हुए है। राजेश सलूजा ने बताया की जीतने वाले पंजाबी विधायक है भाजपा से अनिल विज अंबाला कैंट,घनश्याम अरोड़ा यमुनानगर, प्रमोद विज पानीपत, निखिल मदान सोनीपत,विनोद भ्याना हांसी,कृष्ण मिड्ढा जींद,जगमोहन आनंद करनाल,धनेश अदलखा बड़खल एवं कांग्रेस से गोकुल सेतिया सिरसा, बी

बी बत्रा रोहतक,अशोक अरोड़ा थानेसर कुरुक्षेत्र,मनदीप सिंह पिहोवा एवं परमवीर टोहाना हैं। समाजसेवी राजेश सलूजा ने बताया की इतनी बड़ी संख्या में पंजाबी विधायको का विधानसभा में पहुंचना पंजाबी समाज के लिए खुशी और गौरव की बात है और हमारी हरियाणा की टीम बहुत सारी संस्थाओं के सदस्यों को साथ लेकर इन सभी पंजाबी विधायको से जल्द मिलेगे और पंजाबी वेलफेयर बोर्ड बनाने की बात करेगे ताकि पंजाबी समाज के हित के कार्य इस बोर्ड के तहत हम खुद सुलझा सके। हमारी सबसे बड़ी मांग यह है की रिफुजी कानून बन ना चाहिए ताकि कोई भी व्यक्ति हमारे समाज को रिफुजी कानून के तहत उस पर कार्यवाही हो। हम इन सभी पंजाबी विधायको से यह प्रार्थना भी करेगे की जब हरियाणा विधानसभा में पंजाबी वेलफेयर बोर्ड या रिफ्यूजी कानून पर चर्चा हो तो सभी पंजाबी विधायक चाहे किसी भी पार्टी के हो वह पाटीर्वाद से ऊपर उठकर इस कानून पर एक होकर समर्थन करे। अंत में समस्त पंजाबी समाज राज्य हरियाणा की तरफ से सभी विधायको को विजयी होने की अनंत शुभकामनाएं

ट्रैकोमा पर भारत को मिली सफलता ,1963 में नेहरू सरकार ने शुरू किया था अभियान : डॉ. संदीप सिंहमार।

संस्कार उजाला
हरियाणा/हिसार (गरिमा) : ट्रैकोमा यानी अंधेपन की सबसे बड़ी बीमारी पर भारत ने 61 साल की मेहनत से काबू पा लिया है। भारत से ट्रैकोमा उन्मूलन की घोषणा खुद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की है। ट्रैकोमा के उन्मूलन में भारत की सफलता वाकई में सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह रोग, जो क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस जीवाणु के कारण होता था, दीर्घकालिक दृष्टिहीनता का एक प्रमुख कारण बन गया था। भारत सरकार ने 1963 से इस चुनौती का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाए थे। इस प्रयास में विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ ने भारत सरकार का साथ दिया, और सामुदायिक स्वास्थ्य योजनाओं से लेकर व्यापक स्वास्थ्य शिक्षा अभियानों तक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों से लेकर स्वच्छता के उपायों और उपचार की सुविधाओं में सुधार करके, भारत ने न सिर्फ ट्रैकोमा को नियंत्रित किया बल्कि इसे खत्म करने में भी सफलता पाई। यह अन्य देशों के लिए भी एक प्रेरणादायक मॉडल बन गया है। खासकर उन क्षेत्रों में जहां यह बीमारी अब

भी प्रचलित है। ट्रैकोमा का उन्मूलन, अब तक की आंखों की स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान में वैश्विक स्तर पर किए गए प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह दृष्टिहीनता की रोकथाम की दिशा में एक सशक्त कदम है। यह उपलब्धि इस बात का सबूत है कि सतत और सामूहिक प्रयासों से कठिन से कठिन चुनौतियों को भी मात दी जा सकती है। इस उपलब्धि के साथ ही भारत डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में नेपाल व म्याँमार समेत और विश्व स्तर पर 19 अन्य देशों की उस सूची में शामिल हो गया है, जो इस रोग के पूर्ण उन्मूलन में सफलता प्राप्त कर चुके हैं।वैसे तो ट्रैकोमा की रोकथाम सम्भव है। मगर ट्रैकोमा से होने वाले अन्धेपन को दूर करना बेहद मुश्किल है। तभी यह दुनियाभर में चिंता का विषय बना हुआ है। ट्रेकोमा 39 देशों में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है। इस संक्रमण की वजह से करीब 19 लाख लोग अपनी आंखों की दृष्टि खो चुके हैं। दूसरी तरफ यह संक्रमण बड़ा ही पीड़ादायक भी माना जाता है। भारत ने इस सफर की शुरूआत 1963 में की थी। जब भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनीसेफ की मदद से एक ट्रेकोमा नियंत्रण परियोजना शुरू की तब नामुमकिन माना जा रहा था। पर दृढ़ इच्छाशक्ति से इस बीमारी पर नियंत्रण पा लिया गया है। अब भारत में कोई भी इंसान इस बीमारी से पीड़ित नहीं है। इस अभियान के तहत ट्रेकोमा को खत्म करने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम लागू किया गया, जो डब्लूएचओ द्वारा प्रस्तावित सेफ रणनीति पर आधारित था। इसके तहत, ट्रेकोमा को खत्म करने के लिए समुदाय-आधारित हस्तक्षेपों में, संचरण घटाने के लिए व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने वाली स्वास्थ्य शिक्षा के साथ-साथ सर्जिकल उपचार, सामयिक एंटीबायोटिक उपचार तथा पानी, स्वच्छता एवं साफ-सफाई से जुड़ी पहलें शामिल की गईं। इन कार्यक्रमों का विस्तार करके ग्रामीण क्षेत्रों को भी इसमें शामिल किया गया,तभी भारत जैसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाले देश में सफलता मिली है। 1976 में राष्ट्रीय नेत्रहीनता एवं दृष्टि हानि नियंत्रण कार्यक्रम शुरू होने के बाद, ट्रेकोमा नियंत्रण कार्यक्रम गतिविधियों को इसके साथ एकीकृत किया गया। 2005 में भारत में नेत्रहीनता के 4 फीसदी मामलों की वजह ट्रैकोमा थी। एक क्षेत्रीय समीक्षा समूह ने भारत की इस उपलब्धि का आलेखन तैयार करके व गहन समीक्षा करके विश्व स्वास्थ्य संगठन को सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के तौर पर ट्रेकोमा के राष्ट्रीय स्तर पर उन्मूलन को मान्यता देने का प्रस्ताव पेश किया,जिस पर अंतिम मुहर लग गई है। भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधि डॉक्टर रॉड्रिको एच ऑफि्रन ने कहा, ह्लयह मील का पत्थर मजबूत नेतृत्व और ट्रेकोमा से निपटने में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर कई वर्षों के प्रयासों का परिणाम है। अब भारत के साथ-साथ दुनिया भर के अन्य देशों को भी इस बीमारी पर काबू करने की दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए ताकि दुनिया से अंधेपन की समस्या को कम किया जा सके।

शक्ति-पूजा का पर्व है दशहरा

रमेश सर्राफ धमोरा

दशहरा शब्द हिंदी के दो शब्दों दस और हारा से मिलकर बना है। जहां दस गणित के अंक दस (10) और हारा शब्द पराजित का सूचक है। इसलिए यदि इन दो शब्दों को जोड़ दिया जाए तो दशहरा बनता है। जो उस दिन का प्रतीक है जब दस सिर वाले दुष्ट रावण का भगवान राम ने वध किया था। दशहरा अथवा विजयदशमी पर्व को भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में। दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है।

भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक व शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में फसल उगाकर अनाज घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के लिये वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए उनका पूजन करता है। भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है।

दशहरा शब्द हिंदी के दो शब्दों दस और हारा से मिलकर बना है। जहां दस गणित के अंक दस (10) और हारा शब्द पराजित का सूचक है। इसलिए यदि इन दो शब्दों को जोड़ दिया जाए तो दशहरा बनता है। जो उस दिन का प्रतीक है जब दस सिर वाले दुष्ट रावण का भगवान राम ने वध किया था। दशहरा अथवा विजयदशमी पर्व को भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में। दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है।

दशहरा भारत के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इसी दिन भगवान राम ने बुराई के प्रतीक दस सिर वाले रावण का संहार किया था तो देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अधिकार करने वाले महिषासुर का 10 दिन तक चले भयंकर युद्ध के बाद मां दुर्गा ने वध किया था। इसीलिये इसको विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। इस दिन शस्त्र-पूजा की जाती है। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का समापन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारम्परिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं व मैदानों में मेले लगते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भांति यहां भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियां और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर ढोल, नगाड़े, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रो को लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहाँ दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। बस्तर में यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरू हुआ था। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारम्परिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिया, और आसमिया लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। बंगाल में दशहरा पूरे पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे चार दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों में विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं।

यहां दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं व सिंदूर से खेलती हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। अन्त में देवी प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। मूर्ति विसर्जन यात्रा बड़ी दर्शनीय होती है।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परम्परा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी का पूजन होता है। अगले तीन दिन कला और विद्या की देवी सरस्वती की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी शक्ति की देवी दुर्गा की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयां व कपड़े देते हैं। यहां दशहरा बच्चों के लिए शिक्षा या कला संबंधी नया कार्य सीखने के लिए शुभ समय होता है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

संपादकीय

फिजूल के आरोप-प्रत्यारोप

हरियाणा चुनाव नतीजों को अस्वीकार्य बताने वाले कांग्रेसी नेताओं से निर्वाचन आयोग ने नाराजगी व्यक्त की है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को लिखे पत्र में आयोग ने कहा कि ऐसी टिप्पणियां वैधानिक और नियामक चुनावी ढ़ांचे के अनुसार व्यक्त की गई लोगों की इच्छा को अलोकतांत्रिक तरीके से खारिज करने की ओर ले जाती हैं। आयोग ने खरगे और राहुल गांधी के बयानों पर भी गौर किया जिनमें नतीजों को अनपेक्षित बताया गया। कांग्रेस ने हरियाणा विधानसभा चुनाव की मतगणना पर असंतोष जताते हुए चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज की तथा ईवीएम मशीनों को सील रखने का आग्रह किया। उन्होंने तीस सीटों की मतगणना का संज्ञान लेने को आयोग से कहा है। राहुल इन नतीजों को अप्रत्याशित बता रहे हैं। ज्ञात है कि प्रदेश में दस साल से सत्ता काबिज भाजपा के खिलाफ बन रहे माहौल और एक्जिट पोल में कांग्रेस जीतती हुई नजर आ रही थी। सोशल मीड़िया से लेकर राजनीतिक टिप्पणीकार तक किसान, जवान और पहलवान के मुद्दे को भाजपा के खिलाफ बता रहे थे। इसी वर्ष हुए लोक सभा चुनाव के दरम्यान भी कांग्रेस को वहां 43 फीसद से अधिक वोट प्राप्त हुए थे जबकि इस चुनाव में उनका वोट घट कर 39 फीसद रह गया। हालांकि दोनों प्रमुख दलों के बीच अंतर कम होने के बाद भी भाजपा को हुए लाभ के पीछे छोटे दलों और निर्दलीय उम्मीदवारों की भूमिका अहम मानी जा रही है। कांग्रेस काफी हद तक एंटी इंकम्बेंसी के भरोसे रही। उसकी रणनीति में ही चूक रही जिसे स्वीकारने में वह हिचक रही है। लोक सभा चुनाव के दरम्यान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत पूरी भाजपा का चार सौ पार का दावा बुरी तरह ध्वस्त होते सबने देखा है। उस वक्त विपक्ष ने न तो ईवीएम पर कोई सवाल उठाया था, न ही चुनाव आयोग पर। निःसंदेह कई सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवारों की हार का अंतर आश्चर्यजनक रूप से बहुत कम है। ओबीसी, दलित और जाट वोट बैंक को बैलेंस करने का कांग्रेस का समीकरण जरूर गड़ब़ड़ाया माना जा सकता है। भाजपा के ऐन चुनाव से पहले मुख्यमंत्री बदल कर इस समीकरण को तेजी से अपने पक्ष में करने का दांव यहां काम कर गया। कांग्रेस को अपनी रणनीति बदलनी होगी और जमीनी स्तर पर जुट कर काम करना होगा। आरोपों-प्रत्यारोपों से चुनाव नहीं जीते जाते।

चिंतन-मनन

अनंत शक्तियों का स्वामी हैं हमारा मन

हमें यह बात हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि मन का परमात्मा के साथ घनिष्ठ संबंध है। मन और ब्रह्म दो भिन्न वस्तुएं नहीं हैं। ब्रह्म ही मन का आकार धारण करता है। अतः मन अनंत और अपार शक्तियों का स्वामी है। मन स्वयं पुरुष है एवं जगत का रचयिता है। मन के अंदर का संकल्प ही बाह्य जगत में नवीन आकार ग्रहण करता है। जो कल्पना चित्र अंदर पैदा होता है, वही बाहर स्थूल रूप में प्रकट होता है। सीधी-सी बात है कि हर विचार पहले मन में ही उत्पन्न होता है और मनुष्य अपने विचार के आधार पर ही अपना व्यवहार निश्चित करता है। अगर मन में विचार ही न हों तो फिर क्रियान्वयन कहां से आएगा। शायद इसीलिए कहा गया है कि मन के जीते जीत है और मन के हारे हार। मन का स्वभाव संकल्प है। मन के संकल्प के अनुरूप ही जगत का निर्माण होता है। वह जैसा सोचता है, वैसा ही होता है। मन जगत का सुप्त बीज है। संकल्प द्वारा उसे जागृत किया जाता है।

यही बीज, पहाड़, समुद्र, पृथ्वी और नदियों से मुक्त संसार रूपी वृक्ष उत्पन्न करता है। यही जगत का उत्पादक है। सत, असत एवं सदसत आदि मन के संकल्प हैं। मन ही लघु को विभु और विभु को लघु में परिवर्तित करता रहता है। मन में सृजन की अपार संभावनाएं स्वयं द्वारा ही निर्मित की हुई हैं। मन स्वयं ही स्वतंत्रतापूर्वक शरीर की रचना करता है। देहभाव को धारण करके वह जगत रूपी इंद्रजाल बुनता है। इस निर्माण प्रक्रिया में मन का महत्वपूर्ण योगदान है। मन का चिंतन ही उसका परिणाम है। यह जैसा सोचता है और प्रयत्न करता है, वैसा ही उसका फल मिलता है। मन के चिंतन पर ही संसार के सभी पदार्थों का स्वरूप निर्भर करता है। दृढ़ निश्चयी मन का संकल्प बड़ा बलवान होता है। वह जिन विचारों में स्थिर हो जाता है, परिस्थितियां वैसी ही विनिर्मित होने लगती हैं। जैसा हमारा विचार होता है, वैसा ही हमारा जगत् ।

क्यों नहीं थम रहे पाकिस्तान में चीनी नागरिकों पर हमले

डॉ. आर.के. सिन्हा

पाकिस्तान में बीते रविवार को कराची हवाई अड्डे के पास आत्मघाती हमले में दो चीनी नागरिक मारे गए और कम से कम 10 लोग बुरी तरह घायल हुए हैं। विस्फोट सिंध प्रांत में बिजली परियोजना पर काम कर रहे चीनी इंजीनियरों के काफिले पर निशाना साध कर हुआ था। पृथकतावादी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए), जिसने हाल के वर्षों में पाकिस्तान में विकास परियोजनाओं में शामिल चीनी नागरिकों पर बार-बार हमले किए हैं, ने सार्वजनिक घोषणा करके कहा है कि उसके संगठन ने ही हमला किया है। इसने कहा कि उसने कराची हवाई अड्डे से आ रहे 'चीनी इंजीनियरों और निवेशकों के एक काफिले' को 'निशाना बनाया'। यह हमला उस वक्त हुआ है जब पाकिस्तान शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने की तैयारी कर रहा है। इसमें भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर को भी भाग लेना है। यह भी याद रखा जाए कि चीनियों पर हमला उस वक्त हुआ है जब वहां इंग्लैंड की क्रिकेट टीम टेस्ट मैच खेल रही है।

जाहिर है, आतंकी हमले के कारण पाकिस्तान का यह दावा तार-तार हो गया है कि वहां हालात सामान्य हैं। दरअसल पाकिस्तान में चीन के सहयोग से बन रही बहुत सारी विद्युत और अन्य विकास परियोजनाओं में काम करने वाले चीनी इंजीनियरों पर लगातार हो रहे हमले थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। कुछ महीने पहले पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में एक जलविद्युत परियोजना पर आत्मघाती हमला हुआ था, जिसमें पांच चीनी नागरिकों की मौत हो गई। इसके बाद चीनी कंपनियों ने कम से कम तीन महत्वपूर्ण जलविद्युत परियोजनाओं पर अपना काम रोक दिया है। ये परियोजनाए हैं- दासू बांध, डायमर-बाशा बांध और तारबेला पांचवां एक्सटेंशन। चीनियों पर हमले सिर्फ खैबर पख्तूनख्वा में ही नहीं हो रहे हैं। चीनियों पर हमले बलूचिस्तान और सिंध में भी हो रहे हैं। खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान सटे हुए अफगानिस्तान से। पाकिस्तान के मीडिया में छपी खबरों पर यकीन करें तो इस साल के पहले तीन महीनों में देश के दो प्रमुख राज्यों क्रमशः खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में बीते साल की इसी अवधि की तुलना में आतंकी और हिंसक वारदातों में 92 और 86 फीसद बढ़ोतरी हुई है।

कराची में धमाके पर चीनी दूतावास ने कहा कि उनके इंजीनियर चीनी-वित्तपोषित उद्यम पोर्ट कासिम पॉवर जनरेशन कंपनी लिमिटेड का हिस्सा थे, जिसका लक्ष्य कराची के पास पोर्ट कासिम में दो कोयला ऊर्जा संयंत्र बनाना थे। पाकिस्तान में हजारों चीनी नागरिक विभिन्न परियोजनाओं में काम कर रहे हैं, उनमें से कई बीजिंग की अरबों डॉलर की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के हिस्से के रूप में दोनों देशों के बीच एक आर्थिक गलियारा बनाने में शामिल हैं।

बीएलए का दावा है कि बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा हैं, पर स्थानीय लोगों को कुछ नहीं मिल रहा है।

कराची में विस्फोट के बाद पाकिस्तान ने रस्मी अंदाज में कह दिया कि पाकिस्तान सरकार चीनी नागरिकों की सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है। खबरों के मुताबिक, विस्फोट होते ही कराची के बहुत बड़े भाग के आसमान में घना धुआं छा गया। सारे कराची में दहशत का माहौल व्याप्त है।

पाकिस्तान से आने वाली खबरों से संकेत मिल रहे हैं कि कुछ चीनी नागरिक अपनी जान को खतरा होने के कारण पाकिस्तान छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। पाकिस्तानी सरकार बार-बार अपराधियों को पकड़ने का वादा कर रही है। चीन भी अपने नागरिकों की पुख्ता सुरक्षा की मांग कर रहा है। हालांकि चीनियों पर हमले थम नहीं रहे हैं। चीनी नागरिकों पर हो रहे हमलों के लिए तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी), बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी और इस्लामिक स्टेट-खुरासान को जिम्मेदार माना जाता है। यह तीनों इस्लामिक आतंकी संगठन पाकिस्तान सरकार के खिलाफ लगभग जंग छेड़े हुए हैं। टीटीपी भी चीनियों के पीछे हाथ धोकर पड़ा है। हालांकि यह सच है कि चीनी नागरिकों पर होने वाले हमलों की बीएलए ने सबसे अधिक बार जिम्मेदारी ली है, जिसमें बीते मार्च में ग्वादर बंदरगाह के पास एक पाकिस्तानी नौसैनिक हवाई अड्डे पर हमला भी शामिल है। बीएलए ने अप्रैल 2022 में कराची विश्वविद्यालय के कन्फ्यूशियस संस्थान के पास आत्मघाती हमले में तीन चीनी ट्यूटर और एक पाकिस्तानी ड्राइवर की हत्या कर दी थी।

पाकिस्तान का आतंकवाद का शिकार होना दुखद तो है, पर इसने आतंकवाद को भरपूर खाद-पानी भी दिया है। क्या यह बात सारी दुनिया को नहीं पता। कौन नहीं जानता कि मौलाना अजहर और उनके संगठन जैश ए मोहम्मद को पाक सेना के इशारों पर काम करने वाली खुफिया एजेंसी आईएसआई से मदद मिलती है। जैश भारत का जानी दुश्मन रहा है। जैश सरीखे संगठनों को हमारे पंजाब में आतंकवाद के दौर के बचे हुए गुटों को फिर से खड़ा करने का जिम्मा सौंपा गया है। जैश ए मोहम्मद लश्कर ए तैयबा से ज्यादा खतरनाक और जिद्दी संगठन है। इसका एकमात्र मकसद भारत को हर लिहाज से नुकसान पहुंचाना है। पाकिस्तान में कठमुल्ला खुले तौर पर भारत का विरोध करते हैं, जबकि सेना नेपथ्य में रहकर।

पाकिस्तान के यह सभी कठमुल्ले पंजाबी मूल के हैं। पाकिस्तान में भारत के मित्रों के लिए स्पेस खत्म हो चुका है। पाकिस्तान में निर्वाचित सरकार पर कठमुल्लों और सेना का दबाव अपने आप में गंभीर मसला है। आपके पड़ोस में अराजकता का होना सही नहीं माना जा सकता। इससे आप भी परेशान ही होते हैं। भारत का यह दुर्भाग्य ही है कि पाकिस्तान जैसा घटिया देश उसका पड़ोसी है। इससे तमाम मोर्चो पर डील करना चुनौती तो होती ही है।

दरअसल पाकिस्तान जनता का दुर्भाग्य है कि उन्हें बेहद गैर-जिम्मेदार नेता और गैर-जिम्मेदार सरकार मिलते रहे हैं। ऊपर से करप्ट सेना ने पाकिस्तान को कहीं का नहीं रहने दिया। पिछले साल पाकिस्तान बाढ़ से तबाह हो गया था। तब पाकिस्तान कटोरा लेकर दुनिया से मदद की गुहार लगा रहा था। दूसरी तरफ वह हथियारों का सौदा भी कर रहा था। बाढ़ के कारण देशभर में 800 से अधिक लोगों के मारे गए थे और लाखों लोग बेघर हो गये थे। फिलहाल पाकिस्तान कठमुल्लों के आगे बेबस है। चीनियों पर लगातार हो रहे हमले इस बात की गवाही हैं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

विमानन कंपनियां : यात्री सुरक्षा भगवान भरोसे

रजनीश कपूर

आज की व्यस्त जिंदगी में हम सभी समय को काफी महत्त्व देते हैं। कहीं भी यात्रा करनी हो तो कोशिश करते हैं कि यात्रा जल्द से जल्द पूरी हो। ऐसे में जो भी लोग हवाई यात्रा का खर्च वहन कर सकते हैं वे फ्लाइट से यात्रा करना ही पसंद करते हैं। इसी तरह जो भी व्यक्ति हवाई यात्रा में भी विशिष्ट सेवा लेना चाहते हैं, वे निजी चार्टर कंपनियों की सेवा लेते हैं, और अपनी सुविधानुसार यात्रा करना पसंद करते हैं। बीते कुछ दशकों में हमारे देश में हवाई यात्रा के आंकड़े काफी तेजी से बढ़े हैं। इसके लिए निजी कंपनियों का नागरिक उड्डयन क्षेत्र में आना एक अहम कारण माना जाता है।

अधिक से अधिक निजी एयरलाइंस के आने से हवाई यात्रियों को अपनी सुविधानुसार यात्रा करने का विकल्प भी मिला है, परंतु जिस तरह निजी क्षेत्र के ये ऑपरेटर प्रायः मुनाफा कमाने की मंशा से यात्रियों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर जाते हैं, वह चिंताजनक है। आये दिन हमें इस बात की खबरें मिलती हैं कि पुराने इंजन या पुर्जों के चलते कई निजी कंपनियों के विमानों को 'ग्राउंड' होना पड़ा। कल्पना कीजिए कि यदि किसी विमान में खराब इंजन या अयोग्य पायलट की वजह से कोई हादसा हो जाए तो दोष किसका होगा, विमान कंपनी का या नागरिक उड्डयन मंत्रालय का, या दोनों का? ताजा उदाहरण देश की एक नई निजी एयरलाइन का है, जिसके पास मात्र 25 हवाई जहाज ही हैं। हाल में उनमें से 14 हवाई जहाजों में 'रड़ार कंट्रोल सिस्टम' (पतवार नियंत्रण सिस्टम) को लेकर नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अधीन डीजीसीए द्वारा नोटिस दिया गया। गौरतलब है कि 'रडार कंट्रोल सिस्टम' विमान को इंजन फेल होने की स्थिति में उसके निर्धारित मार्ग में चलने में सहायता करता है। इसके अलावा, विमान के टेकऑफ और लैंडिंग के समय भी विमान को सही दिशा में रखने में सहायक होता है। 'रडार कंट्रोल सिस्टम' का इस्तेमाल इलेक्ट्रॉनिक और मैन्युअल, दोनों तरीकों से किया जा सकता है। अधिकतर परिस्थितियों में 'रडार कंट्रोल सिस्टम' का इस्तेमाल मिड-एयर या यात्रा के दौरान नहीं किया जाता। यदि किसी भी एयरलाइन में, वो चाहे शेड्यूल्ड़ एयरलाइन हो या नॉन-शेड्यूल्ड़ एयरलाइन, अनुभवी पायलट न हों तो वो इस आपात स्थिति से निपट नहीं पाएगी।

सवाल उठता है कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय और डीजीसीए चुनिंदा निजी विमान कंपनियों और कुछ निजी चार्टर कंपनियों के प्रति इतने उदार क्यों होते हैं कि उनके विमानों और पायलटों की कड़ी जांच नहीं करते? जांच केवल कड़ी ही नहीं, औचक भी होनी चाहिए ताकि हर विमान कंपनी चलाने वाले के दिल में डर बैठा रहे और मुनाफे के लालच में और भ्रष्टाचार के चलते वह यात्रियों की सुरक्षा से खिलवाड़ न कर सके। वहीं डीजीसीए में ऐसे तकनीकी विशेषज्ञ अवश्य हों जो खानापूर्ति की नीयत से नहीं, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से ही विमानों और पायलटों की नियमानुसार जांच करें। सरकारी तंत्र का हिस्सा बन कर खानापूर्ति करने वाले भ्रष्ट अधिकारियों की भी जांच मंत्रालय के सतर्कता विभाग से कराई जानी चाहिए। हाल में फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) ने एक सुरक्षा चेतावनी जारी की जिसमें कोलिन्स एयरोस्पेस एसवीओ-730 रडार रोलआउट गाइडेंस एक्युएटर्स (आरआरजीए) से लैस कुछ बोइंग 737 विमानों में प्रतिबंधित या जाम 'रडार कंट्रोल सिस्टम' की संभावना के बारे में ऑपरेटरों को चेतावनी दी गई। सुरक्षित परिचालन सुनिश्चित करने के लिए एयरलाइंस को अलर्ट और प्रासंगिक बोइंग मार्गदर्शन से परिचित होना चाहिए। बोइंग ने अगस्त में 'रडार कंट्रोल सिस्टम' की समस्या से प्रभावित बोइंग 737 ऑपरेटरों को पहले ही सूचित कर दिया था। अब एफएए ने इस बात पर जोर दिया कि मौजूदा स्वचालित जांच लैंडिंग से पहले 'रडार कंट्रोल सिस्टम' की सीमाओं का पता लगा सकती है।

गौरतलब है कि अमेरिका की फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन की यह चेतावनी दुनिया भर की एयरलाइंस को गई है कि वे इस तकनीकी खराबी की गहन जांच करें। हालांकि भारत की इस निजी एयरलाइन ने यह स्पष्टीकरण दिया है कि इस नोटिस से उसके विमान परिचालन पर कोई असर नहीं पड़ेगा और वह कमी दूर करने का प्रयास करेगी परंतु एविएशन विशेषज्ञों के मुताबिक, भारत में एक ही कंपनी के 25 में से 14 विमानों में ऐसा पाया जाना एक गंभीर समस्या है, लेकिन सवाल उठता है कि क्या इस

नई कंपनी द्वारा कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के चलते तो ऐसा नहीं हुआ है? क्या इस कंपनी के पास तकनीकी विशेषज्ञों की कमी है? क्या भारत सरकार के डीजीसीए कुछ चुनिंदा अधिकारियों द्वारा इस त्रुटि को जानबूझकर अनदेखा किया गया? जो भी कारण हो इसकी जांच अवश्य होनी चाहिए। देखना यह है कि आने वाले समय में नागरिक उड्डयन मंत्रालय या डीजीसीए इन कमियों की कैसे जांच करते हैं, और ऐसी गलतियों पर इन एयरलाइन कंपनियों को क्या सजा दी जाती है?

रामलीला समिति के द्वारा मीडिया कर्मियों को किया गया सम्मानित

लक्ष्मण शक्ति व राम विलाप और संजीवनी बूटी लीला का हुआ मंचन

संस्कार उजाला
ब्यूरो चीफ अमित शर्मा
गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र के बारादरी मैदान में रामलीला का मंचन प्रतिदिन किया जा रहा है जिसमें हर दिन भगवान राम की लीला का शुभारंभ मुख्य अतिथि द्वारा किया जाता है जिसमें मुख्य अतिथि हेमंत शर्मा सांसद व प्रतिनिधि योगेंद्र तंवर के द्वारा दी प्रचलित कर भगवान राम की लीला का मंचन किया गया जिसमें रामलीला समिति के अध्यक्ष कौशल कक्के पांडियन ने बताया कि भगवान राम की लीला का मंचन मैं शुभारंभ 28 सितंबर से चल रहा है जिसमें नित्य प्रतिदिन रामलीला में निम्न प्रकार की रामलीला के कलाकारों के द्वारा सुंदर प्रस्तुतियों के साथ लीला का मंचन किया जाता है। आगामी 12 अक्टूबर को दशहरा महोत्सव के उपलक्ष में रामलीला समिति के द्वारा गढ़मुक्तेश्वर में दशहरा के दिन रावण में मेघनाथ का पुतला दहन भी किया जाएगा। जिसमें सुंदर प्रस्तुतियों के साथ रामलीला मंचन में अंतिम लीला के साथ भारत मिलाप व भगवान श्री राम का राजतिलक कर लीला जा समापन किया जाएगा। जिसमें उपस्थित रामलीला समिति के अध्यक्ष कौशल उर्फ (कक्के)पांडियन, महामंत्री रमन शर्मा, कोषाध्यक्ष सतीश गुप्ता, रिंकू शुक्ला पवन शर्मा शोभित ठाकुर हेमंत शर्मा सांसद प्रतिनिधि योगेंद्र तंवर पत्रकार अमित शर्मा, पत्रकार मुलित त्यागी पत्रकार ओमप्रकाश गौतम पत्रकार अशरफ पत्रकार तीरथ मिलन कुमार पत्रकार प्रशांत उर्फ (हनी) शर्मा, पत्रकार इमरान वकील पत्रकार परवेज आदि मौजूद रहे।

डीएम प्रेरणा शर्मा के निर्देशन में मुख्य विकास अधिकारी के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर 10 दिवसीय बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत कन्या पूजन कार्यक्रम का किया आयोजित

संस्कार उजाला
हापुड़/जिलाधिकारी महोदया प्रेरणा शर्मा के निर्देशन के क्रम में मुख्य विकास अधिकारी हिमांशु गौतम की अध्यक्षता में डिप्टी कलेक्टर इला प्रकाश एवं जिला प्रोबेशन अधिकारी श्रीमती स्मिता सिंह के निर्देशन में अन्तराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर 10 दिवसीय कार्यक्रम आयोजन एवं बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजनान्तगर्त कन्या पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 51 बालिकाओं का पूजन किया गया। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित समस्त आम जनमानस को जागरूक किया गया। तथा विभाग द्वारा संचालित मुख्य योजना कन्या सुमंगला योजना बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना बाल सेवा योजना निराश्रित महिला पेंशन योजना स्पॉन्सरशिप योजना के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही यह भी जानकारी दी गई की कोई भी बेटा-बेटी में भेदभाव न करें। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं एवं बच्चों के साथ होने वाले अपराधों पर त्वरित कार्यवाही किये जाने के संबंध में जानकारी दी गई।तथा महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा हेतु हेल्पलाइन नंम्बर 1090 वूमेन पावर, 181 महिला हेल्पलाइन, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 1098 चाइल्डलाइन के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान जिला प्रोबेशन कार्यालय से पंकज यादव कनिष्ठ सहायक/जिला बाल संरक्षण इकाई से अमित कुमार संरक्षण अधिकारी रविंद्र कुमार एल0सी0पी0ओ0, हुमा चौधरी,रिंकु सिंह सामाजिक कार्यकर्ता, के साथ वन स्टॉप सेन्टर से केन्द्र प्रबन्धक सोनिया, रविता,रिंकी साजिद सैफी आदि अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

भाकियू युवा विंग मेरठ मंडल अध्यक्ष के नेतृत्व में किसानों की समस्याओं को लेकर बहादुरगढ़ थाना प्रांगण में धरना शुरू

संस्कार उजाला
गढ़मुक्तेश्वर/भारतीय किसान यूनियन युवा बैंक के मेरठ मंडल अध्यक्ष जीते चौहान के नेतृत्व में क्षेत्रीय किसानों के गन्ना भुगतान आवारा पशुओं के द्वारा फसलों को नुकसान पहुंचाने बिजली विभाग के द्वारा किसान उपभोक्ताओं को परेशान करने के साथ उनके विद्युत मीटर उखाड़ कर कनेक्शन काट देने। क्षेत्र में हरे फलदार वृक्षों का अवैध कटान अवैध खनन जैसे गोरखधंधों एवं पुलिस के द्वारा पीड़ितों से अभद्र व्यवहार करने को लेकर बहादुरगढ़ थाना प्रांगण में धरना प्रदर्शन शुरू किया गया। धरना स्थल पर पहुंचे विद्युत विभाग से एसडीओ एवं तहसीलदार को अपनी समस्याओं से संबंधित ज्ञापन जिला अधिकारी एवं एसपी के नाम सौपा गया। और दोनों अधिकारियों के द्वारा किसानों की समस्याओं का हर संभव समाधान कराने का आश्वासन देने के उपरांत धरने का समापन हुआ। वही इस धरने को लेकर युवा विंग मेरठ मंडल अध्यक्ष जीते चौहान का कहना है कि मिल के द्वारा किसानों के बकाया गन्ने का भुगतान नहीं किया जा रहा है।और हम सिम्भावली शुगर मिल पर जाकर धरना देते हैं। तो वहां पर पुलिस सामने आती है। इसलिए हम खुद पुलिस के पास चलकर आए हैं। इसलिए पुलिस हमारी समस्याओं का समाधान करें। चूंकि किसान विषम परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा है। मानो दो चक्की के पाटों के बीच में जैसे गेहूं पिसता है वैसे ही किसान मुसीबतों के बीच पीस रहा है। यदि उनकी समस्या का समाधान नहीं होता है। तो वह जिला स्तर पर धरना प्रदर्शन करेंगे आंदोलन करेंगे। इस अवसर पर धीरज आशीष शेखर चौहान शकील दिनेश त्यागी सुनील कुमार हरि सिंह भगवत सिंह अनुज कुमार जगत सिंह रविंदर विजेंद्र अजय उमेश कुमार पवन शर्मा विकास सहित सैकड़ो की संख्या में किसान कार्य करता उपस्थित रहे।

हापुड़ पुलिस ने विपक्षियों को फसाने के लिए अपने ऊपर कराई गई फायरिंग के मास्टरमाइंड एवं शार्प शूटर सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर घटना का किया खुलासा

संस्कार उजाला
हापुड़/हापुड़ नगर कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले निजामपुर के पास दो दिन पूर्व मोटरसाइकिल सवार लोगों के द्वारा कार सवार व्यक्ति पर फायरिंग की गई थी। जिसमें गोली कार में बैठे व्यक्ति के कंधे में लगी थी। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल को तत्काल अस्पताल पहुंचाया। और मामले की छानबीन शुरू कर दी थी। बता दें कि थाना हापुड़ नगर क्षेत्र के अंतर्गत 9 अक्टूबर की रात्रि में निजामपुर के पास एक बगैर नंबर प्लेट लगी मोटरसाइकिल पर दो सवार लोगों के द्वारा कार चालक पर फायरिंग करने की सूचना मिली थी। जिस पर तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर कंधे में गोली लगने पर घायल पीड़ित को अस्पताल पहुंचाया। और मामले की जांच शुरू कर दी थी। जिसमें हापुड़ नगर कोतवाली पुलिस ने घटना का खुलासा करते हुए। घटना की रूपरेखा तैयार करने करने के साथ जमीनी विवाद को लेकर अपने विपक्षियों को फसाने के लिए खुद पर फायरिंग कराने वाले मास्टरमाइंड और शार्प शूटर सहित तीन लोगों को घटना में प्रयुक्त तमंचा मय जिंदा खोखा कारतूस 32 बोर एवं बगैर नंबर की शाइन मोटरसाइकिल, सहित गिरफ्तार कर घटना का सफल अनावरण करते हुए। तीन लोगों को गिरफ्तार करने का दावा किया है। वही इस घटना को लेकर एडिशनल एसपी विनीत भटनागर का कहना है कि गिरफ्तार मास्टरमाइंड दीपचंद आगरवाला पुत्र मोतीलाल निवासी छापरी वार्ड मानिकपुर थाना डिब्रूगढ़ जनपद डिब्रूगढ़ असम, ने पूछताछ में बताया कि उसका जमीनी विवाद प्रतिवादी सत्यम वैध के साथ रायपुर देहरादून में जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। और विवादित जमीन को बेचने के लिए सौदा करने को लेकर मैंने साथियों के साथ मिलकर 9 अक्टूबर की रात्रि मे स्वयं अपने ऊपर फायरिंग की घटना कराई थी। जिसमें सत्यम वैध और उसके परिजनों को झूठे मुकदमों में फंसा कर एवं उन लोगों पर दबाव बनाकर जमीन को बेच सकूं। जिसके लिए उसने अपने साथी धनजीत कोलीटा पुत्र रत्नेश कोलीटा निवासी सोनूपरा पाटासर जिला बोरपेटा असम, और शार्प शूटर आसिफ उर्फ आरिफ पुत्र इरफान उर्फ इमरान निवासी महम्मदपुर राजौरी थाना अफजलगढ़ जनपद बिजनौर, के द्वारा विपक्षियों को फसाने के लिए घटना को कारित कराया गया था।

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर स्कूली छात्रा को 1 दिन के लिए बनाया बाबूगढ़ थाना प्रभारी

संस्कार उजाला
हापुड़/हापुड़ पुलिस के द्वारा अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर एक नन्ही सी मुस्कान स्कूली छात्रा का मनोबल बढ़ाने एवं बुद्धि तीव्रता बढ़ाने को लेकर 1 दिन के लिए बाबूगढ़ थाना प्रभारी नियुक्त किया गया। जिसके चलते एक मुकदमा दर्ज करा कर बैंकों की सुरक्षा व्यवस्था का गहनता से लिया जायजा।

जिले में मनचले मजनुओं की धर पकड़ को लेकर एंटी रोमियो स्क्वायड टीम के द्वारा चलाए जा रहे अभियान से मचा हड़कंप

संस्कार उजाला
हापुड़/ जनपद हापुड़ के थानों की एण्टीरोमियों स्क्वाड टीमों द्वारा प्रमुख बाजारों, भीड़-भाड़ वाले इलाकों एवं पार्क आदि स्थानों पर मजनू मनचलों/शोहदों की धर पकड़ को लेकर की जा रही चेकिंग से हड़कंप मचा हुआ है। बता दे की उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के द्वारा नारी सुरक्षा/नारी सम्मान/नारी स्वावलंबन के प्रति उत्तर प्रदेश के सभी थानों में एंटी रोमियो टीम गठित की हुई है। जिसके चलते जनपद हापुड़ में महिलाओं एवं बालिकाओं में सुरक्षा,सशक्तिकरण एवं विश्वास का वातावरण बनाने के उद्देश्य से जनपद के थानों की एण्टीरोमियों टीमों द्वारा प्रमुख बाजारों,गांव/कस्बों, पार्कों एवं भीड़-भाड़ वाले इलाकों के आस-पास मनचलों एवं शोहदों की चेकिंग कर अनावश्यक रूप से घूमने वाले संदिग्ध लड़कों/युवकों से पूछताछ कर उनका डाटा रजिस्टर में एंट्री करने के उपरांत उन्हें हिदायतें देने के साथ उनके परिजनों को भी सूचित किया जा रहा।

दिल्ली लद्दाख भवन पर अपनी मांगों को लेकर आमरण अनशन पर बैठे सोनम वांगचुक से मिलने पहुंचे बीकेयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत

संस्कार उजाला
देश की राजधानी दिल्ली में स्थित लद्दाख भवन में अपनी मांगों को लेकर आमरण अनशन पर बैठे सोशल एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक एवं अन्य सभी आंदोलनकारीयो से मिलने लद्दाख भवन पहुचें। भारतीय किसान यूनियन टिकैत के राष्ट्रीय प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत, सोनम वांगचुक से विस्तारपूर्वक वार्ता कर राकेश टिकैत ने कहा कि वो दिन गए। जब प्रधानमंत्री आंदोलनकारियों के बीच आकर उनकी वास्तविक समस्याएं सुनते थे।इस शांतिपूर्ण आमरण अनशन आंदोलन पर भारतीय किसान यूनियन की नजर है।सरकार को सोनम वांगचुक और अन्य सभी आंदोलनकारियों से सम्मानपूर्वक बात करनी चाहिए। इस अवसर पर मुलाकात के दौरान राष्ट्रीय महासचिव युद्धवीर सिंह,युवा प्रदेश उपाध्यक्ष पश्चिमी उत्तर प्रदेश एकलव्य सिंह सहारा, युवा प्रदेश महासचिव अतुल त्रिपाठी,राहुल यादव, आलम,कर्मवीर सिंह, परमजीतसिंह, आकाश चौधरी अटोला,सुमित राजपूत,हरप्रीत निर्वाण,देवांश चौधरी, हनी जाटव,भानु, अभिषेख आदि मौजूद रहे।

प्राइवेट फाइनेंस कंपनी के द्वारा किसानों का उत्पीड़न करने के विरोध में भारतीय किसान मजदूर संगठन 20 अक्टूबर को तोलता तहसील क्षेत्र के गांव सपनावत में भरेगा हुंकार

संस्कार उजाला
हापुड़/हापुड़ की धौलाना तहसील क्षेत्र के गांव सपनावत में 20 अक्टूबर को होने वाली किसान मजदूर संगठन की महापंचायत मे प्राइवेट फाइनेंस कम्पनी के खिलाफ किसान भरेंगे हुंकार। इस मामले को लेकर किसानों का,मिला रहा भारी समर्थन बता देंकी धौलाना तहसील के गांव सपनावत में किसान मजदूर संगठन एक बार फिर से प्राइवेट फाइनेंस कम्पनी के द्वारा किये गये। उत्पीड़न के खिलाफ हल्ला बोलने की तैयारी में हैं।किसान मजदूर संगठन के प्रदेश महासचिव ब्रहम सिंह राणा का कहना है कि करीब एक माह पूर्व प्राइवेट फाइनेंस कम्पनी के उत्पीड़न से तंग तीन लोगों ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली थी।इस मामले में अभी तक परिवार को कोई मदद नहीं मिलने से नाराज ग्रामीणों ने बैठक कर प्रशासन पर अनदेखी करने का आरोप लगाया है।इसको लेकर आज गांव कपूरपुर के किसानों से जनसंपर्क कर 20 अक्टूबर को होने वाली गांव सपनावत के मेन बस स्टैंड पर किसानों की विशाल महापंचायत में पहुंचने का आह्वान किया है।जिसे पीड़ित परिवार की मदद मिल सके।महापंचायत को लेकर किसान मजदूर संगठन के प्रदेश महासचिव ब्रहम सिंह राणा गांवो में लगातार जनसंपर्क अभियान के माध्यम से किसानों से संपर्क साध रहे हैं।

दशहरा पर्व को लेकर सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टिगत डीएम एसपी ने पैदल भ्रमण कर मेला स्थल का निरीक्षण कर दिए दिशा निर्देश

संस्कार उजाला
अमित शर्मा
गढ़मुक्तेश्वर/जनपद की तहसील गढ़ मुक्तेश्वर में दशहरा पर्व को लेकर सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टिगत आम जनमानस को सुरक्षित महसूस करने को लेकर जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा एवं एसपी कुंवर ज्ञानेंजय सिंह ने मेला स्थल का पैदल भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए।मेला आयोजकों दिए दिशा निर्देश। जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा ने मेला स्थल का निरीक्षण करते हुए कहा कि शरारती तत्वों से निपटने के लिए उनका पुलिस बल सदैव तत्पर है। मेले के दौरान शरारती तत्वों पर तीसरी आंख से रखी जाएगी पैनी नजर। मेले में किसी भी शरारती तत्व के द्वारा अराजकता किसी भी हाल में नहीं की जाएगी बर्दाश्त। अराजकता फैलाने वाले शरारती तत्वों पर की जाएगी सख्त से सख्त कार्यवाही।

नवरात्र के आठवें दिन मॉ गंगा महा आरती में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ला

संस्कार उजाला
हापुड़/ विंध्याचल मॉ विंध्यवासिनी पक्का घाट पर विन्ध्य विकास परिषद के तत्वावधान में दैनिक गंगा आरती के नवरात्र की महा गंगा आरती के आठवें दिन गुरुवार को मुख्य अतिथि के रूप मे अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ला शामिल हुए मुख्य अतिथि को गंगा आरती संस्थापक/प्रमुख रामानन्द तिवारी व टीम द्वारा संकल्प व गंगा मैया का विशेष वैदिक पुजन कराकर पांच अर्चकों द्वारा संगीतमय आरती को प्रारम्भ किया गया अर्चक के पीछे एक सौ एक की संख्या में रिद्धि सिद्धि के रूप बच्चियों ने आरती की थाली लेकर आरती उतारी आरती के समय घाट गंगा आरती देखने वाले भक्तों से पटा रहा आरती पश्चात अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ला बोले मैं माता गंगा का आशिर्वाद लेने हमेशा आता रहता हूं पहले से भव्य रूप में गंगा आरती किया जा रहा है पुरी गंगा आरती टीम को बधाई व शुभकामनाएं दी भव्य आयोजन के लिए जब भी माता गंगा बुलाती रहेगी गंगा आरती में मैं आता रहुंगा आरती के पश्चात पुरी गंगा आरती टीम द्वारा मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र व माता का चित्र देकर सम्मान किया गया जिसमें गंगा आरती संस्थापक/प्रमुख रामानन्द तिवारी जितेन्द्र मिश्रा प्रशांत उपाध्याय धीरज तिवारी साजन तिवारी आनन्द तिवारी गगन श्री माली बलवंत सिंह हिमांशु मिश्रा रितिक मोदनवाल विश्वनाथ साहू मोहित मिश्रा रमेश जी राम जी माली व हजारों के संख्या में श्रद्धालु भक्त शामिल हुए

मिशन शक्ति फेज 05 के तहत बालिकाओं को किया गया जागरूक

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।
रामगढ सोनभद्र। मिशन शक्ति फेज-5 अभियान के तहत नारी सुरक्षा, नारी स्वावलंबन एवं नारी सम्मान हेतु विशेष अभियान चलाकर बालिकाओं को जागरूक किया गया स्वामी विवेकानंद विद्यालय मे जाकर थाना प्रभारी रामदरस राम महिला पुलिस टीम के साथ जाकर बालिकाओं को जागरूक किए जिससे विद्यालय की समस्त छात्राएं प्रेरित थाना प्रभारी रामदास राम से प्रेरित हुई, स्वामी विवेकानंद विद्यालय में नारी सुरक्षा, नारी स्वावलंबन एवं नारी सम्मान हेतु विशेष अभियान चलाकर बालिकाओं को जागरूक किया गया इस दौरान बालिकाओं को विभिन्न हेल्पलाईन नम्बर-1090-वीमेन पावर लाईन, 181-महिला हेल्प लाईन, 108-एम्बुलेंस सेवा, 1076-मुख्यमंत्री हेल्प लाईन, 112-पुलिस आपात कालीन सेवा, 0198- चाईल्ड लाईन, 102-स्वास्थ्य सेवा, गुड टच बैड टच के विषय में जानकारी दी गयी रायपुर थाना अध्यक्ष राम दरसराम के साथ महिला कांस्टेबल व पुलिस कांस्टेबल व विद्यालय के कर्मचारीगण एवं ग्रामवासी उपस्थित रहें।

जिला वालीबाल संघ हापुड़ की ओर सीनियर वालीबॉल चैंपियनशिप में भाग लेने वाले प्रतिभागी 13 अक्टूबर को जेएमएस पब्लिक स्कूल में पहुंच कर अपना रजिस्ट्रेशन कराए

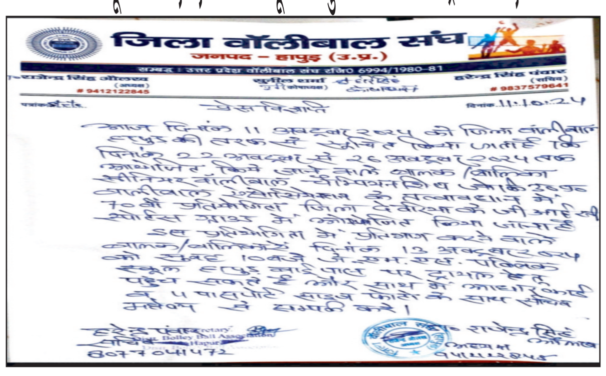
जिला वॉलीबाल संघ
जनपद – हापुड़ (उ.प्र.)
प्रेस विज्ञप्ति
दिनांक 11.10.24

संस्कार उजाला
रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा
हापुड़/हापुड़ जिला वालीबाल संघ जिला अध्यक्ष डॉ राजेंद्र सिंह औलख की तरफ से सभी वॉलीबॉल प्रतियोगिता बालक बालिकाएं खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना सेवा में प्रेषित की जाती है कि सीनियर वॉलीबॉल चैंपियनशिप प्रतियोगिता उत्तर प्रदेश वालीबॉल एसोसिएशन के तत्वाधान में 22 अक्टूबर से 26 अक्टूबर तक होने वाली 70 वीं प्रतियोगिता देवरिया के जी आई जी स्पोर्ट्स ग्राउंड में आयोजित होने जा रही है। स्मृति योगिता में प्रतिभा करने वाले बालक बालिकाएं 13 अक्टूबर को अपने चार फोटो, आधार कार्ड, के साथ जेएमएस पब्लिक स्कूल हापुड़ बाईपास पहुंचकर सचिन से मिलकर अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

अपहरण कर्ता को वादिनी से विवाद करने के आरोप मे किया गया गिरफ्तार

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) व क्षेत्राधिकारी सदर संजिव कटियार के निकट पर्यवेक्षण में शांति भंग के अंदेशा में अंकुश लगाये जाने व उसमें संलिप्त अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना रायपुर पुलिस टीम द्वारा अपहरण से संबंधित मुकदमा के वादिनी से विवाद करने के आरोप में शांति भंग के अंदेशा में अभियुक्त जनाब अली पुत्र बक्शी अली निवासी दुबेपुर थाना रायपुर जनपद सोनभद्र उम्र 22 वर्ष को ग्राम दुबेपुर पोखरा के पास से गिरफ्तार किया गया गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय चालान कर दिया गया गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में थाना प्रभारी रायपुर रामदास राम के साथ पुलिस टीम मौजूद रही।

संस्कार उजाला
सच की हुंकार
संस्कार उजाला समाचार एवं विज्ञापन संपर्क करें जिला प्रभारी अमित शर्मा 8445987618 ,भूपेंद्र वर्मा संवाददाता 9756144404

जिला मजिस्ट्रेट ने दशहरा पर्व के दृष्टिगत तैयारियों तथा शांति एवं कानून व्यवस्था के संबंध में बैठक की

सभी अधिकारी सौंपे गये दायित्वों का करें पूर्णत: पालन ,अधिकारी क्षेत्रों में रहें भ्रमणशील,खाद्य पदार्थों में न हो मिलावट

संस्कार उजाला ब्यूरो

सहारनपुर, जिला मजिस्ट्रेट मनीष बंसल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में दशहरा पर्व पर तैयारियों तथा शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में बैठक आहूत की गई। मनीष बंसल ने नगर मजिस्ट्रेट को रावण दहन स्थलों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होने कहा कि रावण दहन के समय निर्धारित स्थल पर नियमानुसार आतिशबाजी हो एवं अग्निशमन की पूर्ण व्यवस्था पूर्व से की जाए। उन्होने कहा कि सभी अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में भ्रमणशील रहें। शराब की ओवररेटिंग कदापि न हो। सभी खाद्य अधिकारी सुनिश्चित करें कि कहीं पर भी खाद्य पदार्थों में मिलावट न हो। सिविल डिफेंस लगातार सक्रिय रहें एवं रावण दहन के समय ट्रेफिक व्यवस्था को ठीक करने में सहयोग करें। शाकम्भरी देवी मंदिर सहित सभी मंदिरों में संबंधित एसडीएम भ्रमण कर मंदिर प्रशासन के साथ संवाद स्थापित कर समन्वय करें। जिन आतिशबाजी लाईसेंस धारकों का लाईसेंस निलम्बित है वे किसी भी दशा में आतिशबाजी न बेच पाएं। मुख्य चिकित्साधिकारी सुनिश्चित करें कि सभी चिकित्सालय 24 घण्टे संचालित रहें। जिला मजिस्ट्रेट ने निर्देश दिए कि दशहरे पर्व हेतु नामित सभी मजिस्ट्रेट शोभायात्रा के आगे व पीछे एवं थाना क्षेत्रवार समस्त मजिस्ट्रेट शोभायात्राओं एवं जुलूसों में उपस्थित रहकर अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखते हुए शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखना सुनिश्चित करेंगे। शांति एवं कानून व्यवस्था से संबंधित कोई प्रकरण प्रकाश में आता है तो तत्काल उससे उच्चाधिकारियों को अवगत कराएंगे। उन्होने निर्देश दिए कि दशहरे से पूर्व अपने-अपने क्षेत्र में रावण दहन के स्थान को चिन्हित कर लें तथा यह सुनिश्चित कर लें कि रावण दहन बहुत खुले स्थान पर हो तथा वहां अनुमानित एकत्रित होने वाले व्यक्तियों के बैठने अथवा खडा होने का खुला स्थान हो। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रोहित सिंह सजवाण, एसपी सिटी अभिमन्यु मांगलिक, एसपी देहात सागर जैन, अपर जिलाधिकारी प्रशासन डॉ0 अर्चना द्विवेदी, नगर मजिस्ट्रेट गजेन्द्र कुमार सहित संबंधित अधिकारीगण एवं जनपद के सभ्रान्त नागरिक उपस्थित रहे।

मिशन शक्ति पंमम मरण के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन

संस्कार उजाला

सहारनपुर गंगोह।

शोभित विश्वविद्यालय गंगोह में मिशन शक्ति पंचम चरण के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन शोभित विश्वविद्यालय गंगोह में दिनांक 8, 9, व 10 अक्टूबर 2024 को उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशनुसार मिशन शक्ति पंचम चरण के अंतर्गत स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग एंड साइंसेज, स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट एंड लैंग्वेजेज, स्कूल ऑफ लॉ एंड कंस्टीटूशन स्टडीज एवं उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग, सहारनपुर के संयुक्त तत्वाधान में विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम के द्वारा महिला सुरक्षा, महिला स्वावलंबन और सम्मान के प्रति जन-जागरूकता आदि जैसे, विषयों पर महिलाओं को जागरूक करने का कार्य किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की छात्र एवं छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ शोभित विश्वविद्यालय गंगोह के कुलसचिव प्रो.(डॉ.) महिपाल सिंह, आमंत्रित मुख्य अतिथि मिस रूचि गुप्ता सर्किल ऑफिसर, उत्तर प्रदेश पुलिस गंगोह एवं डीन एंड हेड स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट प्रो.(डॉ.) गुंजन अग्रवाल ने मां सरस्वती एवं बाबू विजेंद्र कुमार जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यक्रम की शुरूआत में असिस्टेंट प्रोफेसर सरिता शर्मा और असिस्टेंट प्रोफेसर विकास कुमार ने शोभित विश्वविद्यालय गंगोह के कुलसचिव प्रो.(डॉ.) महिपाल सिंह एवं आमंत्रित मुख्य अतिथि मिस रूचि गुप्ता सर्किल ऑफिसर, गंगोह का स्वागत कर की। इस अवसर पर कार्यक्रम के पहले दिन देवी अहिल्याबाई होलकर डॉक्यूमेंट्री मूवी का प्रसारण विश्वविद्यालय के सेमीनार हॉल में सभी विद्यार्थियों के समक्ष किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मंच का सञ्चालन मिस सोनाली राव ने किया। कार्यक्रम के अंत में शोभित विश्वविद्यालय गंगोह के कुलसचिव प्रो.(डॉ.) महिपाल सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का धन्यवाद प्रेषित किया और कार्यक्रम के आयोजकों को अनेक शुभकामनाएं दी और सभी छात्राओं से कहा कि आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रही है, यह सब कार्य उनके आत्ममनोबल व दृढ़इच्छा शक्ति के कारण ही संभव हो पा रहा है। अत: आप सभी भी इसी इच्छा शक्ति के साथ आगे बढे और प्रत्येक चुनौती का डटकर सामना करे। इस अवसर कार्यक्रम में डॉ. शिवानी, अदिति गर्ग, करुणा अग्रवाल, जूही अग्रवाल, सचिन कुमार, आदेश कुमार आदि शिक्षकगण उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

सड़कों पर फरार्टा भर रहे जुगाड़ वाहन उड़ा रहे नियमों की धज्जियां

संस्कार उजाला

सुरेन्द्र विश्वकर्मा

बडगांव सहारनपुर। जिला सहारनपुर के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे जुगाड़ वाहन बिना किसी दस्तावेजों के व बिना रजिस्ट्रेशन सड़कों पर फराटें भर रहे हैं। इन जुगाड़ वाहनों को समान की ढुलाई के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। बिल्डिंग मैटीरियल वाले भी इन्हीं जुगाड वाहनों को काम में लाते हैं और अपना सामान लोड़ कर भेज देते हैं। आज के टाइम में इन वाहनों का चलन चरम सीमा पर है। ये वाहन लोगों को कम किराये में उपलब्ध हो जाते हैं। शहरों से लेकर गांव तक इन वाहनों को खूब इस्तेमाल में लिया जा रहा हैं। इस तरह के जुगाड़ वाहनों से आए दिन हादसे भी हो रहे हैं। पुलिस प्रशासन से लेकर यातायात पुलिस एवम् परिवहन विभाग की ओर से सड़क पर तमाम दावों के बावजूद जुगाड़ वाहन बेखौफ होकर बड़ी रफ्तार से दौड़ रहे हैं। न ही कोई रजिस्ट्रेशन, ना ही कोई ड्राइविंग लाइसेंस, ना ही कोई प्रदूषण-प्रमाण पत्र , ना ही कोई फिटनेस प्रमाण पत्र, ना ही कोई अधिकृत कम्पनी की मान्यता, बाइक के अनफिट हो चुके इंजनों को फिट करके न कि जुगाड़ वाहन दौड़ाए जा रहे हैं बल्कि 40 से 50% तक ट्रांसपोर्ट भी कर रहे हैं। बाइक को मोड़ीफाई कर बनाए गए जुगाड़ वाहनों में किसी मालवाहक वाहनों से कम समान देखने को नहीं मिलते हैं। ये वाहन बेखौफ होकर थाने के सामने से ही गुजरते हैं। मगर पुलिस द्वारा आज तक इन वाहनों पर कोई कार्यवाही अमल में नहीं लाई गई है। मुख्य मार्गों पर भी इन जुगाड़ वाहनों का संचालन धड़ल्ले के साथ किया जा रहा हैं। कितने खतरनाक है ये जुगाड़ वाहन शहर व गांवों मे दौड़ रहे इन जुगाड वाहनों के चालकों की माने तो यह जुगाड वाहन 15 से 20 हजार रुपए में तैयार हो जाता है। इस वाहन को तैयार करने के लिए पुरानी बाईक जिसके कागज (आरसी) एक्सपायर हो चुके होते है, उससे यह जुगाड़ वाहन तैयार करवा लेते हैं। सबसे खास बात यह है कि इस वाहन की चैकिंग भी कहीं नहीं होती है। इसीलिए इन जुगाड़ वाहनों के ड्राईवर भी भीड़ भाड़ वाले इलाकों में भी जाने से नहीं डरते हैं तथा इन वाहनों को ओवर लोड भर कर भी चलने से नहीं डरते हैं।

इस बार 3D पेपर से बन रहे रावण परिवार के पुतले, तैयार कर रहे हैं मुस्लिम लोग

संस्कार उजाला

सहारनपुर में इस बार 3ऊपेपर से बन रहे रावण परिवार के पुतले, तैयार कर रहे हैं मुस्लिम लोग पप्पू उर्फ रियासत अली ने बात करते हुए बताया कि वह पिछले 15 साल से सहारनपुर में विभिन्न स्थानों पर दहन किया जाने वाले रावण, कुंभकरण, मेघनाथ के पुतलों को अपनी टीम के साथ मिलकर बनाते हैं. सहारनपुर : एक और जहां देश का माहौल कुछ लोग बिगाड़ने की कोशिश कर रहे हैं. इस बीच सहारनपुर में मुस्लिम समाज के लोग हिंदुओं की आस्था से जुड़े दशहरा पर्व पर दहन होने वाले कुंभकरण, मेघनाथ और रावण के पुतलों को बनाकर सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल पेश कर रहे हैं. हम बात कर रहे हैं. चरथावल निवासी पप्पू उर्फ रियासत जो कि पिछले 15 साल से सहारनपुर में गांधी पार्क सहित विभिन्न स्थान पर दहन किया जाने वाले कुंभकरण, मेघनाथ और रावण के पुतलों को बना रहे हैं. उनका कहना है कि उनका परिवार पिछले तीन पीढ़ियों से रावण, मेघनाथ, कुंभकरण के पुतलों को बनाता आ रहा है. खास बात यह है कि इस बार पप्पू उर्फ रियासत के द्वारा 100 फीट ऊंचा, 20 फिट चौड़ा रावण और 3ऊपेपर से उसको तैयार किया जा रहा है. साथ ही गांधी पार्क का रावण इस बार बोलने वाला है. रियासत को हिंदुओं की आस्था से जुड़े कार्य करने में आता है आनंद पप्पू उर्फ रियासत अली ने बात करते हुए बताया कि वह पिछले 15 साल से सहारनपुर में विभिन्न स्थानों पर दहन किया जाने वाले रावण, कुंभकरण, मेघनाथ के पुतलों को अपनी टीम के साथ मिलकर बनाते हैं. 10 लोगों की टीम 15 दिनों में इन सभी पुतलों को बनाकर तैयार कर देती है. इस बार इन पुतलों को लोगों को आकर्षित करने के लिए 3ऊपेपर का इस्तेमाल किया गया है. साथ ही गांधी पार्क का रावण इस बार सबसे ऊंचा यानी की 100 फीट का होगा. जबकि कुंभकरण का पुतला 90 फीट और मेघनाथ का पुतला 80 फीट का बनाया गया है. गांधी पार्क में रावण दहन देखने के लिए लोग हजारों की संख्या में पहुंचते हैं. पप्पू उर्फ रियासत के परिवार के लोग सहारनपुर ही नहीं देहरादून, जम्मू कश्मीर, चंडीगढ़, लुधियाना, मुजफ्फरनगर अन्य स्थानों पर भी रावण, कुंभकरण, मेघनाथ के पुतलों को बना रहे हैं.

विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल नें कराई हिन्दू धर्म मे वापसी

संस्कार उजाला/ संवाददाता

सहारनपुर/ चिलकाना सरसावा विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओ नें आज विधि विधान से पूजा अर्चना करा अर्जुन से बने सहाबुद्दीन की शुद्धिकरण करा घर वापसी कराई गयी। जहाँ बजरंग दल के सह संयोजक सहारनपुर हरीश कौशिक, मनीष योगाचार्य, अनुज सैनी पवन कौशिक ओर संदीप सैनी ओर आयुष महाराज नें बताया की सहाबुद्दीन बने अर्जुन को कुछ विद्धर्मियों ओर जेहादियों द्वारा धर्म परिवर्तन करा मुसलमान बना दिया था जिसनें उन लोगो के उत्पीड़न ओर डर से पुन: अपने सनातन धर्म मे वापसी की है जिसका विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल स्वागत करता है। वहीं सहाबुद्दीन से अर्जुन भारद्वाज बने व्यक्ति नें बताया की वो मुंबई का रहने वाला था जो लगभग बीस वर्ष पूर्व कुछ लोगो द्वारा बहला कर डरा कर मुसलमान बना दिया गया था। आज वह स्वेच्छा से बिना किसी डर ओर दबाब के हिन्दू धर्म स्वीकार करता हूँ ओर योगी जी से न्याय की उम्मीद कर उन लोगो के खिलाफ जिन्होंने उसे मुसलमान बनने पर मजबूर किया के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की मांग करता हूँ। उसने प्रशासन से अपनी सुरक्षा की मांग करते हुए बताया की उन्हें नगर के दबंग व अन्य बड़े लोगो से जान का खतरा है। जिसे थाना चिलकाना पुलिस अभिरक्षा मे उसके घर भिजवा दिया गया है।

संक्षिप्त डायरी

अबेहटा में माहकाल ग्रुप के सदस्यों ने किया श्रीरामलीला मंचन का उद्घाटन।

संस्कार उजाला

अंबेहटा / सहारनपुर श्रीरामलीला समिति द्वारा आयोजित की जा रही श्रीरामलीला महोत्सव में गुरुवार की रात नगर की धार्मिक संस्था श्री महाकाल ग्रुप के सदस्य एवम् अहिरावण का रोल कर रहे विकास जांगिड व अंगद का रोल कर रहे विशाल पांचाल ने फीता काटकर श्रीरामलीला मंचन का उद्घाटन किया और पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के बताए गए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।श्री महादेव संकीर्तन मंडल के कलाकारों द्वारा श्री लक्ष्मण शक्ति की लीला का सुंदर मंचन किया गया।इस दौरान प्रधान सन्नी मित्तल, कोषाध्यक्ष मुकेश कश्यप,अंकित कोरी, गोविंद शर्मा, दीपक सैनी, राकेश कोरी,यश कुमार, मिट्टू, प्रदीप पांचाल, सन्नी शर्मा, नरेश गोयल, श्रवण पांचाल आदि उपस्थित रहे।

महिलाओं पर अश्लील फब्तियां कसना मनचले को पड़ा भारी, लेडी सिंघम श्वेता शर्मा ने मनचले को दबोचा

संस्कार उजाला

सहारनपुर/ एसएसपी रोहित सिंह सजवाण एवं एसपी सिटी अभिमन्यु मांगलिक के निर्देशन में थाना सदर बाजार प्रभारी सूबे सिंह के नेतृत्व में एंटी रोमियो टीम महिला उपनिरीक्षक लेडी सिंघम श्वेता शर्मा ने आज महिलाओं व युवतियों पर अश्लील फब्तियां कस रहे मनचले को हसनपुर चुंगी के पास से साथ धर-दबोचा। आपको बता दें कि एंटी रोमियो टीम महिला उपनिरीक्षक लेडी सिंघम श्वेता शर्मा टीम के साथ हसनपुर चुंगी के पास चेकिंग कर रही थी। यहां एक युवक आने-जाने वाली महिलाओं व युवतियों पर अश्लील फब्तियां कस रहा था। महिलाएं व युवतियां शर्म से नीचे मुंह कर लिया और अपने आप को असहज महसूस कर रहीं थी। उसी दौरान लेडी सिंघम श्वेता शर्मा ने अपनी पुलिस टीम के साथ घेराबंदी कर मनचले विशेष भारद्वाज को पकड़

क्षेत्र में चोरों ने दिया चोरी का अंजाम,क्षेत्र मे देर रात ट्रैक्टर का सामान चोरी

संस्कार उजाला संवाददाता

सहारनपुर। गंगोह मे क्षेत्र मे चोरों के हौंसले इतने बुलंद हैं कि देर रात चोरी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। गांव में एक घेर में खड़े ट्रैक्टर से चोरो ने समान चोरी कर लिया। गंगोह ब्लॉक के गांव बुड्ढाखेड़ा निवासी जानसार पुत्र यामीन के घेर मे खड़े ट्रेक्टर से चोरों के हौंसले इतने बुलंद हैं कि उन्होंने देर रात चोरी की वारदातों को अंजाम दे डाला। गांव बुड्ढाखेड़ा में एक घेर में खड़े ट्रैक्टर से रात के अंधेरे मे चोरों ने ट्रेक्टर की लिपट चोरी कर ली। गांव निवासी जानसार एव यामीन ने बताया कि उसने अपना ट्रैक्टर कुछ दिन पूर्व हन्नू के घेर मे खड़ा किया हुआ था। जिसको बृहस्पतिवार देर शाम जब मालिक ने अपने ट्रेक्टर रोजाना की तरह जाकर देखा तो ट्रेक्टर के पीछे का हिसा का सारा समान चोरी हो गया। जांच मे पता चला कि ट्रैक्टर की लिपट के साथ अन्य समान भी चोरी हो चुका है। पीड़ित ने बताया कि पहले भी गांव में ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। मामले की जानकारी डायल 112 को थे मौके पर डायल 112 पहुंचकर मामले की जांच में जुटी।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन

संस्कार उजाला संवाददाता

सहारनपुर/बेहट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेहट में शिफा मानसिक स्वास्थ्य एवम विकलांगता परियोजना हरबर्ट मसीह अस्पताल,घोंसला दिव्यांग सेवा समिति एवम स्वास्थ्य एवम परिवार कल्याण विभाग के द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे प्रभारी चिकित्साधिकारी डा.विजेंद्र कुमार,प्रोजेक्ट डायरेक्टर डा.राबर्ट कुमार,मेडिकल डायरेक्टर डा.शामुएल, अनुग्रह,प्रोजेक्ट मैनेजर डा.मार्टिन सैम, एस.के.पांडेय,डा.विकास कुमार, डा.अशोक कुमार व परियोजना प्रबंधक राजकमल ने स्युंकत रूप से विधिवत रूप से कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन परियोजना अधिकारी राजीव धीमान ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डा.विजेंद्र सिंह ने कहा कि विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस प्रतिवर्ष 10 अक्टूबर को मनाया जाता है मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की वकालत करने के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण वैश्विक कार्यक्रम है। अन्य वक्ताओं ने भी कहा की विश्व स्वास्थ्य संगठन के पूवार्नुमान के अनुसार, विश्व में लगभग 4 में से 1 व्यक्ति को अपने जीवन में किसी न किसी समय मानसिक स्वास्थ्य समस्या का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह चुनौती वास्तव में लोगों को बहुत व्यापक रूप से प्रभावित करती है। भारत में लगभग 60 से 70 मिलियन लोग सामान्य मानसिक विकारों से पीड़ित हैं जो देखभाल के अभाव के कारण और भी बदतर हो जाते हैं। मानसिक स्वास्थ्य का उपचार न करने की आर्थिक लागत बहुत अधिक है। अवसाद और चिंता के कारण प्रति वर्ष वैश्विक अर्थव्यवस्था की हानि होती है। यह दिवस मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने तथा विश्व भर में ऐसे मामलों की देखभाल में सुधार हेतु प्रयासों को संगठित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। आयोजित होने वाले सामान्य कार्यक्रमों में शिक्षा सेमिनार, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की जांच तथा तनाव को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर चर्चा करने के लिए अभियान शामिल हैं। विशिष्ट कार्यकर्ता भीमसैन राणा ने मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के दौरान आने वाली चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित समस्त व्यक्तियो कोश्नो हेल्थ विदाउट मेंटल हेल्थश्को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन में आने वाली समस्याओं व चुनौतीयो को बिना किसी भेदभाव के खुलकर साझा करने की शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अमित कुमार,आशीष सैनी,मोहित कुमार, घोंसला दिव्यांग सेवा समिति के अध्यक्ष भोपाल सैनी,मनीष भाटला, नवीन सैनी,नौशाद,नफीस, सेनु सैनी,सविता रानी,वालंटियर्स लवली चौधरी,आरती चौधरी,प्रिया कांबोज,रंजना कश्यप,मितलेश, अंतरा,विनिका,तन्नू, नीतू,मिथलेश,किसी, अनिता, परवेश, डिंपल, अंजली आदि लोग उपस्थित रहे।

सपा के कद्दावर नेता एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री का हुआ जोरदार स्वागत

बेरोजगारी व महंगाई पर अंकुश लगाने में पूर्ण रूप से फेल हुई केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकार :-किरणपाल कश्यप

संस्कार उजाला

बेहट। तत्कालीन समाजवादी पार्टी की सरकार में कैबिनेट मंत्री एवं वर्तमान में विधान परिषद सदस्य किरणपाल कश्यप का तहसील बेहट के निकट ताज होटल पर समर्थकों ने फूलमालाएं पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। सपा के नवनिर्वाचित एम.एल.सी. किरण पाल कश्यप अपने काफिले के साथ शुक्रवार को हिमाचल प्रदेश के पांवटा साहिब जा रहे थे जैसे ही वह कस्बा बेहट में तहसील के निकट पहुंचे तो खबर मिलते ही उनके समर्थकों व सपा कार्यकताओं की भीड़ उमड़ पड़ी जिसके चलते उनके समर्थको ने तहसील बेहट के सामने उनका फूलमालाएं पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया। एम.एल.सी. ने केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि भाजपा सरकार में बढ़ती मंहगाई, बेरोजगारी से किसान,मजदूर, कर्मचारी वर्ग एवं छात्र वर्ग परेशान है। केंद्र व प्रदेश की सरकार महंगाई एवं बेरोजगारी पर लगाम लगाने में पूरी तरह से विफल हुई है। आने वाले 2027 विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता भारतीय जनता पार्टी को सबक सिखाने का काम करेगा। आने वाले विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी पूर्णबहुमत के साथ सरकार बनाएगी ।क्योंकि समाजवादी पार्टी संपूर्ण समाज को साथ लेकर चलती है और प्रत्येक समाज व वर्ग को सम्मान देने का काम करती है। इस दौरान मुख्य रूप से बच्चन सिंह कश्यप,रफल सिंह कश्यप,पूर्व प्रधान धर्मपाल कश्यप,डा.विजय कुमार,सुमित कुमार, दीपक कुमार ,सोनू कुमार, जोनी कुमार ,विनीत कुमार,वंश कुमार, मा.कवरपाल ,जोनी कुमार,सुनील कश्यप व राजन कश्यप मौजूद रहे।

सपा नोएडा महानगर ने धूमधाम से मनाई लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की जयंती.....

संस्कार उजाला

सपा नोएडा महानगर संगठन द्वारा नोएडा सेक्टर 81 भूडा गांव में लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की जयंती के अवसर पर उनको नमन किया। सभी समाजवादी लोगों ने जेपी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित करने का काम किया। महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता थे उन्हें 1970 में इंदिरा गांधी के विरुद्ध विपक्ष का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। वे सच्चे समाज सेवक थे जिन्हें श्लोकनायकश् के नाम से भी जाना जाता है 1999 में उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया। महासचिव विकास यादव ने मंच का संचालन किया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य लोगों में चौ जयकरणसिंह,आश्रय गुप्ता,विकाश यादव,विधानसभा अध्यक्ष बबलू चौहान ,किरनपाल अवाना, गीताबोद्ध,बीरपालअवाना,चिंटूत्यागी, कवितगुजर, अमित बसोया ,हरबीरबंसल, रमेश अवाना ,सतपाल अबाना ,सुबाश बंसल, जयबीर, तेजसिंह,सुन्दर अबाना,गुड्ढ, अशोकपंडित,रोहितअवाना,उमेशबंसल, तुषारभूड़ा, गौरवअवाना,आर्यन अवाना,आकाश , सतवीर अवाना ,रिंकू गुर्जर, सुंदर गुर्जर, मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के सदस्य बनाए जाने पर महिपाल वाल्मीकि के पैतृक गांव रामखेड़ी में ग्रामीणों ने ढोल नगाड़ों के साथ जोरदार स्वागत कियाअ

ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष ने अपनी टीम के साथ फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत किया

संस्कार उजाला संवाददाता

सहारनपुर/ गांव रामखेड़ी स्थित डी सी एस एम इंटर कॉलेज में पहुंचे महिपाल वाल्मीकि के स्वागत के लिए ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज संगठन की पूरी टीम तथा मुजफ्फराबाद ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि योगेश पुंडीर पूर्व ब्लाक प्रमुख कुलबीर राणा तथा ग्रामीणों ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के नए नियुक्त सदस्य को फूलों की माला डालकर तथा फूलों का गुलदस्ता देकर जोरदार स्वागत किया नए नियुक्त सदस्य ने गांव की सीमा में घुसकर सबसे पहले ग्राम देवता तथा शिव मंदिर शहीद अनुज कुमार की मूर्ति पर पूजा- अर्चना कर व माल्यार्पण कर आशीर्वाद प्राप्त किया भाजपा सरकार में लंबे समय से ईमानदारी से कार्य करते रहने पर भाजपा सरकार ने महिपाल वाल्मीकि को अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग का सदस्य बनाकर सहारनपुर क्षेत्र में एक मिसाल कायम की आयोग के नए नियुक्त सदस्य महिपाल वाल्मीकि अपने पैतृक गांव रामखेड़ी में पहुंचे जहां पर ग्रामीणों ने ढोल नगाड़ों के साथ उनका जोरदार स्वागत किया तथा इस दौरान उन्होंने गांव वालों को कहा कि मैं आपका बेटा हूं और मैं गांव को परिवार की ही देखता हूं तथा परिवार की तरह ही गांव का विकास करूंगा मैं कभी भी पद का दुरुपयोग नहीं करूंगा और ईमानदारी से कार्य करूंगा बस आप लोगों का आशीर्वाद मेरे सर पर बना रहे इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं कभी भी गलत व्यक्तियों का साथ नहीं दूंगा उधर ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष ओमपाल सैनी ने नए नियुक्त सदस्य को कहा कि कभी भी निर्दोष व्यक्तियों को झूठे मुकदमे में आपकी तरफ से हरी झंडी न मिले बल्कि सही जांच कराकर दोषी व्यक्तियों को ही दंड मिले मैं आपसे पूरे समाज की तरफ से ऐसी आशा रखता हूँ इस दौरान ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि योगेश पुंडीर, कुलबीर राणा, विक्रम सिंह सैनी, पूर्व प्रधान कर्म सिंह सैनी, आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महिपाल वाल्मीकि ने अपनी ईमानदारी के बल पर अपने गांव के साथ-साथ जिला सहारनपुर तथा प्रदेश का नाम रोशन किया है स्वागत कार्यक्रम में मुख्य रूप से ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज की प्रदेश अध्यक्ष सुनीता सैनी, प्रदेश उपाध्यक्ष कौशल सैनी,प्रदेश मीडिया प्रभारी खेमचंद सैनी, सहमीडिया प्रभारी अजय सैनी, जिला महामंत्री पल्लवी सैनी, तहसील बेहट अध्यक्ष डॉ संजय सैनी, रामखेड़ी के पूर्व प्रधान सुलेख चंद वाल्मीकि, नाथीराम, सचिन सुबोध श्रवण कुमार पूर्व प्रधान रमेश चंद, किरण पाल, अंकित वर्मन, महेंद्र, कुवरपाल आदि सैकड़ो कार्यकर्ता एवं ग्रामीणों ने स्वागत समारोह में अपनी सहभागिता दी कार्यक्रम की अध्यक्षता मोहर सिंह पुंडीर ने की कार्यक्रम का संचालन ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज संगठन के सहारनपुर जिला अध्यक्ष मास्टर ऋषिपाल सैनी ने किया

विभिन्न योजनाओं की समीक्षा हेतु डीएम ने अधिकारियों के साथ की बैठक

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर

बहराइच मिशन शक्ति विशेष अभियान, प्रतिमा विसर्जन के लिए की गई तैयारी, पीएम सूर्य घर, लम्बित राजस्व वादों के निस्तारण, विभिन्न परियोजनाओं के लिए भूमि की उपलब्धता, श्रमिकों के राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, फैमिली आईडी, चरागाहों की भूमि को अतिक्रमण से मुक्ति, आपदा के लम्बित प्रस्तावों इत्यादि की समीक्षा हेतु वृहस्पतिवार को देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक के दौरान जिलाधिकारी मोनिका रानी ने उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिया कि चरागाह की भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराकर राजस्व परिषद के पोर्टल पर अपलोड कराना सुनिश्चित करें। समस्त एसडीएम पुलिस क्षेत्राधिकारी के साथ विसर्जन स्थलों एवं जुलूस मार्गों का निरीक्षण कर सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करा दें। रिसोर्स रिकवरी सेन्टर निर्माण कार्य की समीक्षा के दौरान जिला पंचायत राज अधिकारी

को निर्देश दिया गया कि निमार्णाधीन कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराये तथा जो परियोजनाएं अभी अराम्भ है उन्हें तत्काल प्रारम्भ करा दिया जाय। मिशन शक्ति फेज-5 से सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिये गये अभियान अन्तर्गत निर्धारित कार्यक्रमों को सम्पन्न कराने के पश्चात उसको पोर्टल पर अपलोड भी कराया जाय। प्रोजेक्ट अलंकार की समीक्षा के दौरान एसडीएम को निर्देश दिये गये कि प्राप्त प्रस्तावों का परीक्षण कर तीन दिवस के अन्दर जनपद स्तरीय समिति को उपलब्ध करा दें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र, प्रभागीय वनाधिकारी बहराइच अजीत प्रताप सिंह, अपर जिलाधिकारी गौरव रंजन श्रीवास्तव, मुख्य राजस्व अधिकारी महेन्द्र पाल सिंह, नगर मजिस्ट्रेट शालिनी प्रभाकर, उप जिलाधिकारी कैसरगंज आलोक प्रसाद आईएएस, सदर के राकेश कुमार मौर्या, पयागपुर के दिनेश कुमार, महसी के अखिलेश कुमार सिंह, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट राम दयाल, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ. राजेश उपाध्याय, अधि.अभि. लो.नि.वि. प्रदीप कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहे।

पिता की जयंती पर 11 कन्याओं का विवाह कराकर समाजसेवी विनय अग्रवाल ने दिया आशीर्वाद

संस्कार उजाला
जनपद शाहजहांपुर

शाहजहांपुर:- परी नमकीन के संस्थापक और समाजसेवी स्वर्गीय अशोक कुमार अग्रवाल की जयंती पर उनके बेटे विनय अग्रवाल ने एक अनोखा और समाजसेवी कदम उठाया है। अपने पिता की याद में उन्होंने 11 गरीब कन्याओं का विवाह कराने का फैसला लिया। यह सामूहिक विवाह कार्यक्रम अजीजगंज स्थित वृंदावन गार्डन में आयोजित किया गया जिसमें हर कन्या को वह सभी उपहार दिए जा रहे हैं जो आमतौर पर माता-पिता अपनी बेटी को विवाह में देते हैं।

विनय अग्रवाल ने अपने पिता के समाजसेवी कार्यों को आगे बढ़ाते हुए इस अनूठी पहल की शुरूआत की है। उन्होंने कहा पिता जी का सपना था कि सामूहिक रूप से गरीब कन्याओं का विवाह कराया जाए। उनकी इसी इच्छा को पूरा करने के लिए हमने 11 कन्याओं की शादी का आयोजन किया है। विनय ने बताया

कि उनके पिता स्वर्गीय अशोक कुमार अग्रवाल हमेशा जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे रहते थे और यह आयोजन भी उसी सेवा भावना का एक हिस्सा है। आपको बता दे कि विनय अग्रवाल समाजसेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। उन्होंने परी आप की रसोई की स्थापना की है, जहां जरूरतमंदों को सिर्फ 10 रुपये में भरपेट भोजन उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा इस सामूहिक विवाह कार्यक्रम में आने वाले सभी मेहमानों के लिए विशेष भोजन और अन्य जरूरी सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई । इस आयोजन में शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहें जिन्होंने कन्याओं को आशीर्वाद दिया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद, कटरा विधायक वीर विक्रम सिंह, एमएलसी सुधीर गुप्ता, पूर्व विधायक रोशन लाल वर्मा, अजय प्रताप यादव, भाजपा महानगर अध्यक्ष शिल्पी गुप्ता,पूनम मेहरोत्रा, राजेश गंगवार, रोहित गुप्ता, दिनेश कुमार, सचिन बाथम, संजय गुप्ता, मनीष गुप्ता, नेहा यादव सक्सेना, अनिल गुप्ता, शाहनवाज खां, महेंद्र दुबे, मनोज अग्रवाल, अंकुर कटियार, जसमीत साहनी, बंकिम सूरी, डाक्टर अमित, डाक्टर नमिता सिंह आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

जिओ पेट्रोल पंप सेवा देने के लिए सुचारू रूप से हुआ संचालित।

संस्कार उजाला
आनंद विनोद गुप्ता

निघासन खीरी। तकनीकी कारणों के चलते हैं जिओ पेट्रोल पंप लगभग दो महीने ग्राहकों की सेवा करने के लिए बंद रहा जिससे ग्राहकों को डीजल व पेट्रोल मिलने में समस्याएं आ रही थी व ग्राहकों को लंबी दूरी तय करना पड़ता था जिसको देखते हुए दो माह के बाद जिओ पेट्रोल पंप संचालित हुआ चलिए आपको बता दें कि जिओ पेट्रोल पंप के टैंक में टेक्निकल समस्याएं आ जाने के कारण पेट्रोल मिलना बंद हो गया था जिसकी शिकायत जिओ पेट्रोल पंप के मैनेजर इंद्रेश यादव ने अपने उच्च अधिकारी से किया साथ ही अधिकारियों ने संज्ञान लेते हुए दो माह में कंपनी द्वारा टेक्निकल फाल्ट को सही करके पेट्रोल पंप का सुचारू रूप से संचालन किया गया पंप का संचालन एरिया मैनेजर साध्वी राय द्वारा किया गया साथ ही पंप परिसर की व्यवस्थाएं भी जांची परखी गई इस दौरान जिओ पेट्रोल पंप के समस्त कर्मचारी गण मौजूद रहे। प्रत्येक वर्ष की तरह त्योहारों में जिओ पेट्रोल पंप अपने ग्राहकों के लिए सुनहरा अवसर लाता रहता है जैसा कि इस बार के दशहरा अवसर पर जियो पेट्रोल पंप अपने ग्राहकों के लिए सुनहरा अवसर लाया जिसमें दशहरा के शुभ अवसर पर जियो पेट्रोल पंप एक रुपया प्रति लीटर ग्राहकों को छूट देगा यह लाभ दशहरा के शुभ अवसर पर पेट्रोल ग्राहकों को दिया जाएगा इस दौरान पेट्रोल में छूट पाकर ग्राहकों के चेहरे खिल उठे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का हुआ आयोजन।

संस्कार उजाला
आनंद विनोद गुप्ता

निघासन खीरी। शासन के आदेश अनुसार पशुओं के देखरेख व उनमें बीमारी ना फैले जिसके चलते पशुचिकित्सालय मिबासन द्वारा मुख्य पशुविकित्साधिकारी खीरी डा. जगदीश प्रसाद के दिशा निर्देशन में ग्राम खमरिया के झौउवापुरखा में पंण्डित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का आयोजन किया गया साथ ही शिविर का उद्घाटन ग्राम प्रधान प्रतिनिधि विपिन सिंह द्वारा गौमाता का पूजन एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा. इन्द्र देवमाहर दारा पशुओं में टैगिंग का महत्व पशुबीमा योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। डा. राकेश कुमार द्वारा टीकाकरण एवं हरे चारे के महत्व के बारे में बताया गया पशुधन प्रसार अधिकारी मोहन सिंह राना बेटनरी फार्मासिस्ट एस. आर. राना, पैरावेट हरेन्द्र सिंह, पलविन्दर सिंह, तिजिति किदि कुमार, सुधरपाल यादव एवं अर्पितआति कैम्प को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा अन्त में डा. माहर द्वारा कैम्प में आये हुए समस्त पशुपालक भाइया का धन्यवाद ज्ञापित किया गया इस दौरान ग्रामीण सहित पशु विभाग के अधिकारी व कर्मचारी गण मौजूद रहे।

मोटर साइकिलें तथा पार्ट्स की बरामदगी के साथ शातिर आटो लिफ्टर हुए गिरफ्तार

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र द्वारा जनपद में चोरी/नकबजनी की घटनाओं को गम्भीरता से लेते हुए सर्वसम्बन्धित को घटनाओं को रोकने व अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। पुलिस अधीक्षक द्वारा दिये गये निर्देश के अनुपालन के में अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी प्रकाश कुमार के निकट पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी नगर अमन कुमार सिंह के नेतृत्व में थाना कोतवाली नगर पुलिस टीम ने चोरी के अभियोगो में संज्ञान में आये कुल चार शातिर ऑटोलिफ्टर अभियुक्त सौरभ त्रिवेदी पुत्र अभिमन्यु त्रिवेदी निवासी गौरिया कलाँ थाना कोतवाली देहात श्याम किशोर सिंह उर्फ कल्लू पुत्र मलखान सिंह निवासी गौरियां कलाँ थाना कोतवाली देहात सूरज पुत्र रामऔतार निवासी लोध पुरवा अनोगी थाना संदना भानू उर्फ प्रशान्त लोध पुत्र राम सिंह लोध निवासी चंदेहरा थाना कमलापुर जनपद सीतापुर को हारून कमिश्नर की बाग निकट श्यामनाथ रेलवे क्रासिंग के पास से गिरफ्तार करने में

सफलता हासिल की है। अभियुक्तों की निशादेही पर मौके से कुल सात अदद मोटर साइकिल जिनमें एक प्लेटिना नं0 UP 34 AA 4599, एक स्पलैण्डर स्पलैण्डर रंग काला नं0 UP 34 BM 5062, तीन सुपर स्पलैण्डर यूपी 34एवी 8650 एक अपाचे यूपी 32एन एम 9385,सुपर स्पलैण्डर यूपी 32 केवी 5174, सुपर स्पलैण्डर यूपी 34एडी6880एक बुलेट मोटर साइकिल यूपी 34 बीआर 3017 बिना नम्बर प्लेट्स तथा एक मोटर साइकिल के खोले हुए पार्ट इंजन व वाहन खोलने के विभिन्न प्रकार के उपकरण बरामद हुए। अभियुक्तों ने पूंछताछ में बताया कि वे मिलकर जनपद के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से योजना बद्ध तरीके से मोटरसाइकिलें चोरी करते हैं जिन्हें लाकर छिपाकर रखकर उनके पार्ट को अलग अलग करते हुए पार्टस को बेचकर अपना जीवन यापन करते हैं। दिनांक 27अगस्त 2024 को मोटर साइकिल सुपर स्पलैण्डर,मोहल्ला गोडियन टोला से,दिनांक 11 सितम्बर 2024 को प्लैटिना मोटर साइकिल रंग काला ग्रे को आवास विकास कालोनी शहर सीतापुर से, दिनांक 11अगस्त 2024 को स्पलैण्डर प्लस रंग काला मोटर साइकिल को ग्राम गोपालपुर थाना संदना क्षेत्र से,करीब दो माह पूर्व सुपर स्पलैण्डर रंग काला पुरानी बस्ती,संदना देवी मन्दिर थाना संदना सीतापुर से,करीब दो माह पूर्व अपाचे सफेद रंग की मोटर साइकिल सिधौली कस्बा सीतापुर से,करीब पन्द्रह दिन पूर्व सुपर स्पलैण्डर रंग काला को आगा कालोनी शहर सीतापुर से, करीब दो माह पूर्व सुपर स्पलैण्डर काला रंग को सहगल स्कूल शहर सीतापुर से एवं माह नवम्बर 2023 को जेल गेट सीतापुर से बुलेट मोटर साइकिल रंग काला चोरी की थी। अभियुक्तों द्वारा कारित की गयी घटनाओं के संबंध में मु0अ0सं0367/24 धारा 303(2) बी0एन0 एस0,मु0अ0सं059/24 धारा 379 भादवि, मु0अ0 सं0 308/24धारा 303(2) बी0एन0एस0थाना कोतवाली नगर जनपद सीतापुर,मु0अ0सं0 329 /24 धारा 303(2)बी0एन0 एस0थाना संदना जनपद सीतापुर पंजीकृत हैं। अभियुक्तों के विरुद्ध मु.अ.सं.388/24 धारा 317(2)/317(4)बी0 एन0एस0थाना कोतवाली नगर पंजीकृत कर कठोर कार्यवाही हेतु सम्बन्धितों का चालान सम्बन्धित न्यायालय में किया गया। पुलिस के जिम्मेदारों ने बताया कि जनपद में अपराधियों के विरूद्ध इसी तरह से निरन्तर कार्यवाही चलती रहेगी। इस खुलासे से सीतापुर नगर पुलिस टीम के उप निरीक्षक मनोज कुमार सिंह सुधाकर सिंह, हर्षित कुमार सिंह,विनोद कुमार गिरि, आरक्षी मोनू कुमार, विशेष कुमार, सौरभ कुमार, नवनीत तिवारी, सुरेन्द्र कुमार वर्मा,प्रिन्स तोंगर दीपक चौधरी शामिल रहे।

हेलेपारा गांव की नव दुर्गा समिति के कार्यक्रम में पहुंचे- उत्कर्ष वर्मा

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी होगा भव्य दशहरा और सुंदर झांकियों का आयोजन

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

जिले की तहसील महमूदाबाद के सदरपुर क्षेत्र में गोडैचा चौराहे के समीप हेलेपारा गांव के कार्यक्रम में पूर्व कैबिनेट मंत्री नरेंद्र सिंह वर्मा के भतीजे उत्कर्ष वर्मा पहुंचे। आपको बता दें कि हेलेपारा गांव में नवरात्रि के उपलक्ष्य में प्रथम नवरात्रि के दिन से हो रहे कार्यक्रम के तहत माता रानी के दरबार से नव दुर्गा समिति हेलेपारा की ओर से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़ी ही धूम धाम से झांकी निकली जायेगी। यहां के दशहरा जुलूस में भव्य मूर्तियों का नजारा देखने को मिलेगा। यह कार्यक्रम पूरे गांव के सहयोग से आयोजित किया जाता है कार्यक्रम के दौरान माता रानी के जयकारों से पूरा गांव गूंज उठता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत धार्मिक झाकियां संस्कृति कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं कार्यक्रम में प्रति दिन देर रात तक भक्तों से पंडाल भरा रहता है। कार्यक्रम में पहुंचे उत्कर्ष वर्मा ने माता रानी के दरबार में हाजिरी लगाई माथा टेका माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त किया।नव दुर्गा समिति के लोगों ने बताया कि इस बार गाजे बाजे के साथ माता रानी की सबसे भव्य मूर्तियों की झांकी निकाली जाएगी। कार्यक्रम के लिए पूरे गांव का सहयोग मिलता है। कार्यक्रम के आयोजन के लिए पोखरा गांव निवासी उत्कर्ष वर्मा मौके पर पहुंचे सभी ग्रामीणों को मिलकर धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आज भी हिंदू धर्म में सबसे ज्यादा पूजा पाठ आदि सांस्कृतिक कार्य क्रम किए जाते है। उन्होंने सभी लोगों इसी प्रकार से अपने सनातन धर्म को बनाए रखने की अपील की। माता के दरबार में माथा टेकते हुए माता रानी से प्रार्थना की,कि सबको आशीर्वाद प्राप्त हो सब पर कृपा माता रानी बनाए रखें। सुंदर प्रस्तुति के साथ धार्मिक रामलीला ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। रामलीला में राम लक्ष्मण और गुरुदेव की लीला को दिखाया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन अनूप मौर्या,नव दुर्गा समिति गोविंद तिवारी,पूर्व प्रधान हेलेपारा,सिराजुद्दीन विजय पाल मौर्य,विपिन मौर्या,कुल दीप मौर्य,राजकुमार मौर्य, अमितवर्मा धर्मराज,दिलीप वर्मा,ओम प्रकाश गुप्ता, प्रदीप राज,ओम प्रकाश राज,राममिलन यादव, कैलाश भार्गव आदि समस्त ग्राम वासियों ने मिलकर कराया।

अपनी बुजुर्ग मां को शराबी ने उतारा मौत के घाट, हत्यारा पुलिस गिरफ्त।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

जिले की लहरपुर कोतवाली क्षेत्र की भदफर चौकी अन्तर्गत इकलौते शराबी पुत्र के द्वारा अपनी मां की हत्या कर दी गई। घटना के बाद शुक्रवार को पैंसठ वर्षीय मृतका मूला का शव पोस्टमार्टम के बाद गांव में आने पर गांव में शोक की लहर दौड़ गई और हर कोई हत्यारे पुत्र दिवाकर को कोस रहा था। ज्ञातव्य है कि हत्यारा पुत्र दिवाकर शादी शुदा है और उसके एक आठ वर्ष का लड़का व पांच वर्ष की एक लड़की है।वह अपनी दादी मूला के पास रह रहे थे।दिवाकर की शराब पीने की गलत हरकतों के चलते उसकी पत्नी उसे छोड़कर अपने मायके में रह रही है। बृहस्पतिवार को शराब के नशे में धुत होकर तीस वर्षीय दिवाकर अपनी मां मूला से और शराब के लिए पैसे की मांग करने लगा। दिवाकर को शराब के लिए और पैसे ना देने पर दिवाकर ने अपनी मां मूला को पीट पीट कर मार डाला घटना के बाद ग्रामीणों ने उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। मृतका मूला के पास थोड़ी सी कृषि योग्य भूमि है। शुक्रवार को गमगीन माहौल में मूला के शव अन्तिम संस्कार कर दिया गया। सुरक्षा की दृष्टि पुलिस बल तैनात रहा।

फर्जी पुलिसकर्मी बनकर ग्रामीणों पर रौब झड़ना पड़ा महंगा

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

जिले के मधवा पुर चौराहे के पास उस समय भीड़ इकट्ठा हो गई जब एक आदमी सादे कपड़ों में नशे में धुत होकर एक मोटरसाइकिल से बली राम राजवंशी के घर पर पहुंच कर अपने को पुलिस का सिपाही बता कर सभी को रौब में लेने लगा वह जिस मोटरसाइकिल से आया था उस पर आगे अंग्रेजी में पुलिस तथा पीछे पुलिस का मोनोग्राम बना हुआ था।मोटरसाइकिल का नम्बर पी बी 10/एफ पी 1284 अंकित था। देखने में हष्ट पुष्ट होने के कारण गांव वाले उसे पुलिस कर्मी समझकर उसकी भद्दी करतूतों को भी नजरंदाज कर रहे थे तथा स्थानीय पुलिस आने का इंतजार कर रहे थे।ग्रामीण भी पुलिस होने के कारण उसकी गलत मांगों एवं करतूतों को भी नजरंदाज कर रहे थे,परन्तु वह ग्रामीणों के घरों में भी घुसने का प्रयास करने लगा एवं अशोभनीय मांग करने लगा। उसी बीच किसी ने उसका वीडियो बना कर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होने पर सूचना थाना रामकोट पुलिस को दी गई पुलिस मौके पर पहुंच कर पूछताछ कर रही थी। मामला गंभीर होने पर सूचना पुलिस अधीक्षक सीतापुर एवं वायरल वीडियो को पहुंचाया गया।उन्होंने थाना प्रभारी को निर्देशित किया थाना प्रभारी मौके पर पहुंच कर उस फर्जी पुलिस कर्मी को थाने ले आये जिससे किसी अनहोनी घटना होने से बच गई ।उक्त फर्जी पुलिसकर्मी से कड़ाई से हुई पूंछताछ में उसकी पहचान नैमिषारण्य थाना क्षेत्र के पश्चिमी वार्ड निवासी रामू उर्फ प्रवीण अवस्थी के रूप में हुई।

चंद्रमौली आश्रम रमनगरा में गरीब और जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्टडी मटेरियल का किया गया वितरण।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

जिले के विकास खंड पहला की ग्राम पंचायत कोरार के रमनगरा इलाके में स्थित चन्द्र मौली आश्रम पर लायंस क्लब लखनऊ निर्वाण द्वारा सहयोग छात्र शिक्षा समिति के सहयोग से लगभग एक सौ गरीब और जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्टडी मटेरियल का वितरण किया गया।साथ ही में उन विद्यार्थियों के लिए रिफ्रेश मेंट की भी व्यवस्था भी रखी गई। उक्त कार्यक्रम में लायंस क्लब लखनऊ निर्वाण के सचिव डॉ.साकेत ने अपनी टीम के साथ गांव के जरूरत मंद बच्चों को स्टडी मटेरियल जैसे कॉपी,पेन, पेंसिल,रबर,स्केल,पेन्सिल बॉक्स आदि समेत कहानियों की किताबें भी वितरित की गई। सहयोग शिक्षा समिति के सचिव धर्मेंद्र कुमार ने बहुत ही कुशलता से पूरे कार्यक्रम को अपने सहयोगी अमित मिश्रा,मंजीत यादव,सत्यम कुमार,अंबुज मिश्र,राजेंद्र सिंह,बिनीता,भानु प्रताप, भानु इत्यादि ने सफलता पूर्वक सम्पन्न करवाया। इस कार्यक्रम के दौरान चन्द्रमौलि आश्रम की तरफ से संस्था के सचिव मुकेश मिश्रा ने उक्त कार्यक्रम में आए हुए सभी लोगों का आश्रम की तरफ से स्मृति स्वरुप रामचरित मानस एवं भागवत गीता की कॉपी भेंट कर सम्मान किया।

प्राथमिक विद्यालय मुकीम पुर में मिशन शक्ति कार्यक्रम हुआ सम्पन्न।

प्रधानाध्यापिका आशा वर्मा ने छात्राओं को किया पुरस्कृत ।

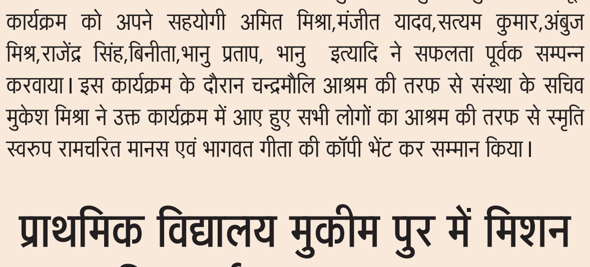

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

जिले की तहसील सिधौली क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय मुकीमपुर में मिशन शक्ति के अन्तर्गत स्कूल की छात्राओं को जागरूक किया गया। सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में शामिल महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की पहल पर प्रदेश भर में चलाया जा रहा मिशन शक्ति अभियान के क्रम में आज सिधौली विकास खण्ड अन्तर्गत ग्राम मुकीमपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय की प्रधानाध्यापिका आशा वर्मा सहायक अध्यापिका सुमिता श्रीवास्तव व रिमझिम चटर्जी ने संयुक्त रूप से विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को उपहार वितरित किया। इस मौके पर प्रधान अध्यापिका आशा वर्मा ने सुरक्षा सम्बन्धित जानकारी दी जिसमें विद्यालय के छात्र -छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।प्राथमिक विद्यालय में मिशन शक्ति, नारी सुरक्षा,नारी सम्मान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छात्राओं एवं महिलाओं को अपराधों में तत्काल कार्रवाई के तहत 1090,112 के बारे में विस्तार से जानकारी देने के साथ ही बच्चों को गुड टच बैड टच बाल अपराध, साइबर क्राइम आदि विषयों पर भी जानकारी दी गई। इस मौके पर सहायक अध्यापिका सुमिता श्रीवास्तव,रिमझिम चटर्जी, शिक्षामित्र सुरेश कुमार ललिता देवी मौजूद रहे।

शारदीय नवरात्रःनवमी पर कन्या भोज के बाद भक्तों के लिए हुआ भंडारा

गौरी देवी मंदिर में नगरपालिका अध्यक्ष ने सपरिवार किया कन्यापूजन

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।

शारदीय नवरात्रि की महानवमी पर शुक्रवार को श्रद्धालुओं ने मां सिद्धि दात्री पूजा की,कन्या पूजन और हवन किए। नवदुर्गा ग्रंथ के अनुसार शारदीय नवरात्र में नौवें दिन की अधिष्ठात्री देवी मां सिद्धि दात्री की उपासना से हर प्रकार की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

जिले की खैराबाद नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती बेबी गुप्ता व अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता ने भुलनपुर खैराबाद में मां गौरी देवी

मंदिर में कन्या पूजन कर कन्या भोज करवाया माता स्वरूप कन्याओं को भोजन करवा कर उन्हें विभिन्न प्रकार के उपहार व दक्षिणा प्रदान किया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनधि अभिषेक गुप्ता ने कहा नव रात्रि के नौवें दिन मां दुर्गा की नौवीं शक्ति मां सिद्धि दात्री के चरणों में प्रणाम करता हूं। मां सिद्धिदात्री से प्रार्थना है कि भक्तजनों की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करें और सद्बुद्धि देकर उनका कल्याण करें।

इसके बाद मन्दिर प्रांगण में भंडारे का शुभारम्भ हुआ जिसमें सैकड़ो भक्तो ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर गौरी देवी मन्दिर अध्यक्ष बच्चन मिश्रा,बबलू मिश्र,सभासद आलोक बाजपेई,सभासद अप्पू , राकेश गुप्ता,संदीप गुप्ता, संदीप मिश्र,अंकित गुप्ता , गुड्डू त्रिपाठी,गौरव गुप्ता , गौरव अग्रवाल आदि उपस्थित रहे।

सरकार ने पंचायत घरों पर लाखों रुपए की धनराशि खत्म करने के बाद उनको बनवाया था लेकिन उनका क्या फायदा जनता को मिला।

जनता पहले भी सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी के लिए भटक रही थी आज भी वैसे ही भटक रही है

संस्कार उजाला
खुटार शाहजहांपुर

खुटार /उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने गरीब जनता की सुविधा के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत घर बनवाने के लिए लाखों रुपए की धनराशि खत्म की और पंचायत घर बनवाने के लिए अधिकारियों को आदेश दिए थे ताकि गरीब जनता गांव से ब्लॉक मुख्यालय दूर है तो अपनी समस्याओं को लेकर पंचायत घर में जाकर बता सके और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी भी मिले जनता को और ग्राम विकास अधिकारी

रोस्टर के हिसाब से पंचायत घर में पहुंचे और गरीब जनता की समस्याओं का निस्तारण करें पंचायत घर में खुली मीटिंग की जा सके जनता को सरकार की योजनाओं के बारे में बताया जा सके लेकिन सरकार के द्वारा चलाई गई योजनाएं कागजों में भले ही संचालित हो रही हो जमीनी हकीकत में कुछ देखने को नहीं मिल रहा है क्षेत्र के गांव चमराबोझी की ग्राम पंचायत में बने पंचायत घर अभी भी अधूरा पड़ा है पिछले कई महीनो से पंचायत घर का काम चल रहा है उसमें दरवाजा खिड़की भी नहीं लगाए गए हैं और पानी की टंकी भी गायब है पाइपलाइन भी नहीं है समरसेबल भी नहीं दिख रही भले ही पंचायत सहायक कागजों की हकीकत में लगा हुआ हो मौके पर कुछ नहीं है सब बंद पड़ा हुआ है इसकी जानकारी ग्राम प्रधान राम भजन से करनी चाहि तो उन्होंने कहा कि इसका काम चल रहा है,, हम अभी मीटिंग में हैं हमें इसकी जानकारी नहीं है जानकारी करने के बाद बताएंगे वीडियो वीरेंद्र मिश्रा खुटार।

विधायक ने कन्याओं का पांव पखार किया कन्या पूजन

संतकबीरनगर। में आज नवमी का पर्व धूमधाम से मनाया जा रहा है। मेंहदावल से विधायक अनिल कुमार त्रिपाठी ने शारदीय नवरात्रि के नवमी तिथि पर मां भगवती के नौ स्वरूपों की प्रतीक नौ कन्याओं का पूजन कर नवरात्र आराधना पूरी की। मंत्रोच्चार के बीच एक घंटे चली पूजन प्रक्रिया में उन्होंने नौ कन्याओं और एक बटुक भैरव के पांव पखारकर उन्हें अपने हाथ से भोजन कराया। कन्याओं को दक्षिणा व उपहार देकर विदाई करने के बाद विधायक ने कहा कि नवरात्र का पर्व नारी शक्ति के सम्मान का प्रतीक है। सनातन हिंदू धर्म में कुंवारी कन्याओं का पूजन और सत्कार आदि शक्ति मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों का पूजन है।

विधायक अनिल कुमार त्रिपाठी ने कहा कि नवरात्र का अनुष्ठान आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ सामाजिक एकता के माध्यम से राष्टीय एकता का मजबूत करने का अवसर है। इसे हर सनातन अनुयायी को समझना होगा।

विधायक खुद कन्याओं को भोजन परोसते और उन्हें अपने हाथ से खिलाते नजर आए। इसके साथ ही उन्होंने सभी जिले वासियों को राम नवमी की शुभकामनाएं दी हैं। ज्योतिषाचार्य पंडित आरके चौधरी ने बताया कि अष्टमी और नवमी तिथि एक दिन ही पड़ रही है। ऐसे में 11 अक्टूबर को कन्या पूजा करना शुभ है। कन्या पूजन का मुहूर्त सुबह 10.41 बजे तक है। राहु काल सुबह 10.41 बजे से दोपहर 12.08 बजे तक रहेगा। दो वर्ष की कन्या के पूजन से दुःख और दरिद्रता दूर होती है।पंडित विंध्याचल चतुर्वेदी ने बताया कि कन्या पूजन करने के लिए सबसे पहले कन्याओं को आमंत्रण देकर आए। साथ ही 2 से 10 साल तक की कन्याओं को ही आमंत्रण दें। दो वर्ष की कन्या (कुमारी) के पूजन से दुःख और दरिद्रता मां दूर करती हैं। साथ ही तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति रूप में पूजी जाती है। त्रिमूर्ति कन्या के पूजन से धन-धान्य आता है। वहीं चार वर्ष की कन्या को कल्याणी माना जाता है। इनकी पूजा से परिवार का कल्याण होता है। इसके साथ ही पांच वर्ष की कन्या रोहिणी कहलाती है। रोहिणी पूजन से व्यक्ति को रोगों से मुक्ति मिलती है।छह वर्ष की कन्या को कालिका रूप कहा गया है। कालिकी रूप से विद्या, विजय, राजयोग की प्राप्ति होती है। सात वर्ष की कन्या का रूप चंडिका माना जाता है। चंडिका रूप के पूजन से ऐश्वर्य-धन की प्राप्ति होती है। आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी कहलाती है। इनका पूजन करने से वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है। वहीं नौ वर्ष की कन्या को दुर्गा का रूप माना जाता है। इनके पूजन से शत्रुओं का नाश होता है। वहीं, दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कहलाती है। सुभद्रा अपने भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं।पंडित विंध्याचल चतुर्वेदी के मुताबिक इस बार शारदीय नवरात्र की नवमी तिथि 11 अक्टूबर को दोपहर 12.06 बजे से शुरू होकर 12 अक्टूबर की सुबह 10.57 बजे पर समाप्त होगी। अष्टमी तिथि 10 अक्टूबर को दोपहर 12.31 बजे से शुरू हुई। जो अगले दिन 11 अक्टूबर को दोपहर 12.06 बजे समाप्त होगी। ऐसे में अष्टमी और नवमी तिथि का व्रत 11 अक्टूबर को रखा जाएगा। 11 अक्टूबर 2024 को सिंहवाहिनी की आराधना के लिए तीन शुभ मुहूर्त है। अष्टमी और नवमी तिथि पर आध्या शक्ति की पूजा का समय सुबह 06.20 से 07.47 बजे तक है। उन्नति मुहूर्त सुबह 07.47 से 09.14 बजे तक है। वहीं, अमृत मुहूर्त सुबह 09.14 बजे से 10.41 बजे तक है।

संक्षिप्त डायरी

देवी पंडालों में पहुंचकर गौ रक्षा समिति सम्मानित कर गौ माता को राष्ट्र माता घोषित करने की कर रही अपील

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

नवरात्रि के पावन पर्व पर गौ रक्षा समिति के पदाधिकारी लगातार हर पंडाल में पहुंचकर हर कमेटी को गौ माता का चित्र देकर सम्मानित कर रहे हैं और उनसे आग्रह किया जा रहा है कि आप सभी इस पर विशेष सहयोग करें और गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित करने के लिए सरकार से विशेष आग्रह किया जाए। गौ रक्षा समिति के जिला अध्यक्ष महेश कुमार प्रजापति ने जानकारी देते हुए बताया कि यह गौ रक्षा समिति के द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है की गौ माता को एक विशेष दर्जा प्राप्त होना चाहिए। इससे गौ माता को बचाया जा सके, नहीं तो आने वाले भविष्य में गौ माता अगर नहीं रहेगी तो दुनिया में बहुत नुकसान हो सकता है। हर पंडाल में पहुंचकर सभी कमेटी के पदाधिकारी से अपील की जा रही कि आप भी आम जनमानस्य से अपील करें और गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित करने में सहयोग करें। परम पूज्य शंकराचार्य महाराज के द्वारा लगातार पूरे देश में भ्रमण करके गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित करने के लिए पूरे देश की यात्रा की जा रही है और सभी लोगों से विशेष सहयोग मांगा जा रहा है जो कि महाराष्ट्र सरकार के द्वारा गौ माता को राज्य माता का दर्जा दिया जा चुका है, लेकिन अभी तक उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा गौ माता को राज्य माता का दर्जा नहीं दिया गया। गौ रक्षा समिति की विशेष मांग है कि गौ माता को राजमाता का दर्जा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिया जाना चाहिए जिससे गौ माता को बचाया जा सके। इस मौके पर जिला अध्यक्ष अधिवक्ता प्रकोष्ठ दीपक शुक्ला, जिला महामंत्री राकेश कुमार त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष महेश कुमार धुरिया, जिला उपाध्यक्ष कृष्ण चंद्र प्रजापति, जिला उपाध्यक्ष राघवेंद्र द्विवेदी, जिला उपाध्यक्ष आलोक कुमार प्रजापति, जिला उपाध्यक्ष मछंदर सिंह कहार, जिला मीडिया प्रभारी मितेश कुमार, जिला मंत्री महेश प्रसाद गुप्ता, जिला मंत्री महेश गुप्ता, जिला कोषाध्यक्ष प्रेम गुप्ता, खाटू श्याम सेवा मंडल से महामंत्री वीरेंद्र गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष सत्यम मिश्रा, कुलदीप नामदेव, नगर अध्यक्ष बृज किशोर द्विवेदी, आदि कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। दशहरे का त्योहार मनाने की अपील की।

डीएम और एसपी ने फ्लैग मार्च कर जाना क्षेत्र का हाल

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप एवं पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल एवं अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज के साथ अपर जिलाधिकारी एवं राजस्व राजेश कुमार एवं अन्य पुलिस प्रशासन के अधिकारियों द्वारा कल रात्रि तक से कालू कुआं चौराहे एवं प्रमुख बाजार होते हुए तक फ्लैग मार्च किया गया। प्रशासन द्वारा दशहरा एवं रामनवमी तथा आने त्योहारों को शांतिपूर्वक रूप से संपन्न कराने हेतु फ्लैग मार्च के द्वारा सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया। फ्लैग मार्च में क्षेत्राधिकार पुलिस सहित उप जिलाधिकारी सदर अमित शुक्ला एवं अन्य अधिकारीगण सहित पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

विद्युत के बिना है सब कुछ अधूरा, धरती की ऊर्जा का सबसे बड़ा श्रोत सूर्य

संस्कार उजाला

आज विश्व के हर क्षेत्र में विकास के लिए विद्युत जरूरी हैं। विद्युत/ऊर्जा के बिना धरती के समस्त जीव-जन्तुओं पेड़-पोधों मानव सहित सम्पूर्ण विकास की मशीनरी अधूरी हैं। इस धरती पर ऊर्जा का सबसे बड़ा श्रोत सूर्य हैं। धरती पर मौसम और जलवायु परिवर्तन सूर्य की ऊर्जा के कारण ही होते हैं। सूर्य की ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलनें को ही सौर ऊर्जा कहा जाता हैं। विद्युत उत्पादन से अधिक विद्युत उपभोग होने को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश सरकार सौर ऊर्जा पर बल दे रही हैं। प्रदेश सरकार की उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति-2022 के अन्तर्गत अयोध्या शहर को प्रदेश की पहली बार मॉडल सोलर सिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस योजना का उदेश्य शहर के कुल विद्युत भार का 10 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा के माध्यम से पूर्ति की जाएगी, जिसके अन्तर्गत अयोध्या सिटी के साथ-साथ अन्य 16 नगर निगमों में भी सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना करायी जा रही है। ११सोलर सिटी कार्यक्रम११ के अन्तर्गत नगर आयुक्त के माध्यम से प्रस्ताव प्राप्त कर राज्य स्तरीय समिति के अनुमोदनोपरान्त कार्य कराये जाते हैं। वर्तमान वर्ष में अयोध्या सोलर सिटी में रु. 15. 75 करोड एवं अन्य सोलर सिटी में रु. 40.00 करोड़ का बजट प्राविधान किया गया है। जिससे नगर निगमों के विद्युत भार में कमी आयेगी। अयोध्या सोलर सिटी कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2023-24 में 766 अदद स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 2300 सोलर स्ट्रीट लाइट, 250 अदद सोलर हाई मास्ट, 3.33 मेगावाट क्षमता के ऑनग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट, 50 कि०वा० क्षमता का ऑफग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट एवं 06 मीट्रिक क्षमता का 01 अदद सोलर आधारित कोल्ड स्टोरेज, 40 सोलर ट्री (01 कि. वॉ.). 18 सोलर ट्री (2.5 कि.वॉ.), 10 बॉटर किऑस्क के अधिष्ठापन का कार्य पूर्ण कराया जा चुका है। साथ ही पर्यटन के दृष्टिगत अभिकरण द्वारा जल परिवहन प्रदूषण मुक्त परिवहन को बढ़ावा देने हेतु 02 सोलर बोट का संचालन सरयू नदी पर किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अयोध्या शहर की सरयू के तट पर 40 मेगावाट का सोलर प्लाण्ट स्थापित किया गया है। अयोध्या शहर में 10.25 किलोमीटर के मार्ग पर जो लक्ष्मण किला से निर्मली कुण्ड तक सरयू नदी तट पर स्थित है, 487 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट स्थापित कराते हुये प्रकाशमान किया गया है।अयोध्या सोलर सिटी कार्यक्रम के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में विगत वर्ष की भांति अयोध्या शहर को प्रदेश की पहली मॉडल सोलर सिटी के रूप में विकसित किये जाने की कार्यवाही गतिमान हैं। अयोध्या सोलर सिटी कार्यक्रम के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष में 150 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 1100 सोलर स्ट्रीट लाइट, 75 सोलर हाई मास्ट संयंत्रों के अधिष्ठापन की कार्यवाही की जा रही है। प्रदेश के अन्य नगर निगमों में भी सोलर सिटी कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्य कराये गये है। सोलर सिटी के अन्तर्गत कार्यक्रम वित्तीय वर्ष 2024-25 वाराणसी नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 500 सोलर स्ट्रीट लाइट, 100 सोलर हाई मास्ट, 10 सोलर ट्री (01 किलोवाट), 04 सोलर बेस्ड ड्रिंकिंग वॉटर किऑस्क एवं 200 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। वाराणसी में वर्ष 2023-24 में 1512 सोलर स्ट्रीट लाइट एवं 200 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना कराई जा चुकी हैं। झांसी नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 200 सोलर स्ट्रीट लाइट एवं 25 सोलर हाई मास्ट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। वर्ष 2023-24 में झाँसी नगर निगम में 150 सोलर स्ट्रीट लाइट, 20 स्मार्ट स्ट्रीट लाइट की स्थापना की गई। आगरा नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 600 सोलर स्ट्रीट लाइट, 50 सोलर हाई मास्ट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। गत वर्ष 200 स्र्नाट सोलर स्ट्रीट लाइट 100 सोलर हाईमास्क 20 सोलर ट्री की स्थापना कराई गई है। अलीगढ़ नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 90 सोलर हाईमास्ट, 550 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 39 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट 35 सोलर हैरिटेज हाईमास्ट की भी स्थापना की जा चुकी है। प्रयागराज नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 05 सोलर हैरिटेज हाई मास्ट, 02 सोलर ट्री, 05 सोलर हाई मास्ट एवं 02 सोलर वेस्ड ड्रिंकिंग वॉटर किऑस्क की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 460 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना की जा चुकी है। लखनऊ नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 30 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 60 सोलर हाई मास्ट, 800 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 244 सोलर हाई मास्ट, 100 सोलर स्ट्रीट लाइट एवं 10 सोलर ट्री की स्थापना की जा चुकी है। कानपुर नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 20 सोलर हैरिटेज हाई मास्ट, 310 सोलर हाई मास्ट, 02 सोलर वेस्ड ड्रिंकिंग वॉटर किऑस्क, 02 सोलर ट्री, 1000 सोलर स्ट्रीट लाइट एवं 75 किलोवाट का ऑनग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 100 सोलर हैरिटेज हाईमास्ट, 170 हाई मास्ट, 1600 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना की जा चुकी है। गाजियाबाद नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 500 सोलर हाई मास्ट, 160 किलोवाट क्षमता के ऑनग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट एवं 200 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 100 हाईस्माट, 100 सोलर स्ट्रीट लाईट की स्थापना की जा चुकी है। शाहजहांपुर नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 10 सोलर हाई मास्ट, 100 सोलर स्ट्रीट लाइट, 10 किलोवाट क्षमता का ऑफग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट एवं 01 सोलर ट्री (01 किलोवाट) की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 11 सोलर हाईस्माट, 100 सोलर स्ट्रीट लाइट, 02 सोलर ट्री की स्थापना की जा चुकी है। मुरादाबाद नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत मुरादाबाद में 05 सोलर हाई मास्ट, 05 सोलर वेस्ड ड्रिंकिंग वॉटर किऑस्क 04 सोलर ट्री. 04 किलोवाट क्षमता का ऑफग्रिड सोलर पावर प्लाण्ट एवं 20 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 70 सोलर हाईमास्ट एवं 150 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना की जा चुकी है। फिरोजाबाद नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 55 सोलर हाई मास्ट, 260 सोलर स्ट्रीट लाइट एवं 02 ई-चार्जिंग स्टेशन की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 150 सोलर स्ट्रीट सोलर लाईट ट्री की स्थापना की जा चुकी है। मथुरा नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 50 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 70 सोलर हाई मास्ट, 10 सोलर हैरिटेज हाई मास्ट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 100 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट की स्थापना का कार्य पूर्ण हो चुका हैं। गोरखपुर नगर निगम के परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 175 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 100 सोलर हाई मास्ट एवं 1000 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 220 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 700 सोलर लाइट की स्थापना की जा चुकी हैं। सहारनपुर के नगर निगम परिक्षेत्र में सोलर सिटी योजनान्तर्गत 02 स्मार्ट सोलर स्ट्रीट लाइट, 02 सोलर हाई मास्ट 02 सोलर ट्री, एवं 350 सोलर स्ट्रीट लाइट की स्थापना का कार्य कराया जा रहा है। 20 प्राथमिक विद्यालयों में 2-02 किलोंवाट के आफग्रिड पावर प्लांट की स्थापना की चुकी हैं। बरेली नगर निगम में गत वर्ष 80 सोलर हाईमास्ट एवं 720 सोलर स्ट्रीट की स्थापना की जा चुकी हैं। प्रदेश के नगर नियमों में सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन कर आवश्यक विद्युत आपूर्ति होती रही, इसके लिउ प्रदेश सरकार लगातार कार्य कर रही हैं।

माँ दुर्गा व देवी देवताओं के दर्शन को श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

संवाददाता

कुशीनगर। शारदीय नवरात्र के अवसर पर नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच माँ दुर्गा का पूजन अर्चन श्रद्धालु कररहे हैं। पंडालों में स्थापित माँ दुर्गा के दर्शन पूजन के लिये जगह - जगह खुब श्रद्धालुओं जुट रहे हैं। जनपद के खड्डा, पड़रौना, तमकुहीराज, हाटा, कप्तानगंज सहित नगर कस्बों में पंडालों सजी माता भगवती की प्रतिमा व देवी मंदिरों में तड़के भोर से देर रात तक भक्त उमड़ रहे हैं। कसया नगर के दीवानी कचहरी, नेशनल हाईवे चौक, गोला बाजार, गोपालगढ मार्ग, गांधी चौक, कसाडा चौक, सपहा मार्ग, पड़रौना मार्ग, रामकोला मार्ग, गोरखपुर मार्ग, बुद्ध स्थली पर भव्य पंडाल सजाए गए हैं। जहां दुर्गा प्रतिमाएं स्थापित है। कुशीनगर विधायक पीएन पाठक,

नगरपालिका अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल, नपा अध्यक्ष प्रतिनिधि राकेश जायसवाल, भाजपा नेता और समाजसेवी ओमप्रकाश जायसवाल, पूर्व नपं अध्यक्ष कृष्ण कुमार, सभासद पीएन सिंह, सभासद विजेंद्र कुमार सिंह उर्फ भगत, बुद्धा पीजी कुशीनगर छात्रसंघ के पूर्व महामन्त्री अशोक कुमार सिंह सहित श्रद्धालुओं ने मां भगवती का पूजन अर्चन किया। इसके अलावे विभिन्न वार्डो जिसमें सबया, अनिरुद्धवा, सिसवा, भरौली, मथौली, सपहा, पकवा इनार, मुंडेरा, खेदनी, नकहनी, शाहपुर कुरमौटा सहित कसया तहसील क्षेत्र के गांवों, चौराहों पर दुर्गा पूजा समितियों द्वारा बनाये गए पंडालों में विद्वान आचार्य गण के मंत्रोच्चार के बीच शक्ति की देवी माँ दुर्गा, कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवी देवताओं का पूजन चल रहा है। पंडालों को काफी आकर्षक ढंग से सजाया गया है। डेकोरेटेड लाइटों और प्रकाश के लिए जेनरेटर की भी व्यवस्था पूजा समितियों ने किया है। जगह - जगह भगवती जागरण, कीर्तन व डीजे का कार्यक्रम शुरू हो गया है। आज दशहरा का जगह जगह मेला लगेगा और रावण दहन का आयोजन होगा। प्रशासन ने दुर्गा प्रतिमाओं के विसर्जन को लेकर विशेष निर्देश दिए हैं।

योजनाओं का लाभ लेने के लिए श्रमिकों को किया जागरूक

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए विभाग के कर्मचारी गांधी चौक समीप मौजूद मजदूरों को विभाग में पंजीयन/नवीनीकरण कराकर योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए जागरूक किया। गुरुवार को उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के कर्मचारी शशि शेखर मिश्र ने काम की

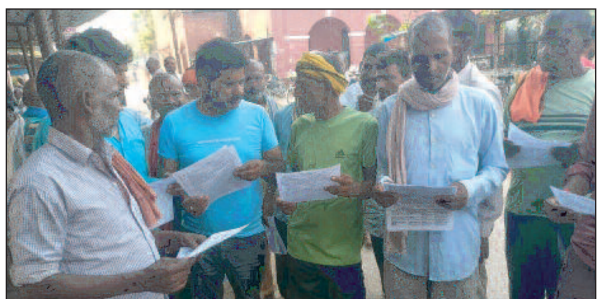

इन्तजारी करते मजदूरों को विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया तथा उपस्थित मजदूरों को अपने समीप के जनसेवा केन्द्र पर पहुंच कर जनसेवा केन्द्र के माध्यम से यू पी बी ओ सी डब्ल्यू के साइड पर श्रमिक पंजीयन कराने तथा पूर्व में पंजीकृत श्रमिकों को ससमय नवीनीकरण कराकर विभाग द्वारा श्रमिकों के हित में संचालित विभिन्न प्रकार के जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने के जागरुक किया। इस दौरान उमेश, सोहन, रमेश, पवन, राजू बैठा सहित दर्जनों श्रमिक मौजूद रहे।

पैगंबर पर बोले तो सिर तन से जुदा, हनुमान पर बोले तो माफी? राहुल प्रधान ने उठाए सवाल

संस्कार उजाला

1. हनुमान एवं श्री राम को मुस्लिम बताने वाले शिक्षक पर दर्ज हो देशद्रोह का मामला :राहुल प्रधान
2. जांच के बाद बछवाड़ा बीडीओ ने शिक्षक पर अंकित कराई प्राथमिकी
3. स्पष्टीकरण का जवाब नहीं देने पर होगी निलंबन की कार्रवाईप्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय, हरिपुर कादराबाद में मंगलवार को एक मुस्लिम शिक्षक द्वारा सातवीं कक्षा में विद्यार्थियों के सामने प्रभु श्रीराम एवं हनुमान जी के संबंध में मनगढ़ंत टिप्पणी करने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है।पूर्व भाजपा किसान मोर्चा फायरब्रांड नेता राहुल प्रधान ने शुकवार को दोबारा इस मामले पर तीखी टिप्पणी की है। उन्होंने कहा कि अगर पैगंबर पर कोई बोले तो सिर तन से जुदा का फतवा दे दिया जाता है, हम तो श्रीराम व हनुमान के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले शिक्षक पर सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। इस शिक्षक पर देशद्रोह का मुकदमा किया जाना चाहिए। केवल बच्चों के अभिभावकों से माफी मांगने से काम नहीं चलेगा। शिक्षक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज इधर, इस मामले की जांच के बाद बीडीओ अभिषेक राज ने शुकवार को बछवाड़ा थाने में आवेदन देकर उक्त शिक्षक मो. जियाउद्दीन पर सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी अंकित कराई है। 24 घंटे में देना होगा स्पष्टीकरण उन्होंने बताया कि आरोपित शिक्षक से 24 घंटे के अंदर सनातन धर्म के भगवान के बारे में बिना किसी प्रयोजन वर्ग कक्ष में बच्चों के सामने आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में स्पष्टीकरण की मांग की गई है। संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर निलंबन की कार्रवाई प्रारंभ की जाएगी। क्या है पूरा मामला? उल्लेखनीय है कि आरोपित शिक्षक अंग्रेजी विषय पढ़ाते हैं। उन्होंने दो दिन पूर्व कक्षा में बच्चों से कहा था कि आज मंगलवार है, तुम लोग हनुमान जी की पूजा करते हो, जबकि हनुमानजी स्वयं नमाज अदा करते थे और श्रीराम को भी ऐसा करने को प्रेरित करते थे। तुमलोग भी नमाज पढ़ा करो। घर लौटकर बच्चों ने इस बारे में अभिभावकों को बताया तो अभिभावकों ने बुधवार को विद्यालय पहुंचकर हंगामा किया था। वहीं राहुल प्रधान ने इंटरनेट पर बयान जारी कर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से उक्त शिक्षक को सनातन धर्म विरोधी बताते हुए विभागीय कार्रवाई किए जाने की मांग की थी।

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक यात्रा पर आए यूरोपीय संघ के देशों के प्रतिनिधिमंडल ने अजमेर दरगाह पर की जियारत

संवाददाता

गोरखपुर। आध्यात्मिक एकता के एक ऐतिहासिक क्षण में, हाजी सैय्यद सलमान चिश्ती, गद्दी नशीन दरगाह अजमेर शरीफ और अध्यक्ष चिश्ती फाउंडेशन ने यूरोपीय संघ के देशों के 25 सदस्यीय विशिष्ट प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया। यह प्रतिनिधिमंडल पहली बार भारत की यात्रा पर आया था, जिसमें फ्रांस, नॉर्वे, स्वीडन, जर्मनी, पोलैंड, स्विट्जरलैंड और अन्य यूरोपीय देशों के नागरिक शामिल थे। इस यात्रा का उद्देश्य सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समझ को बढ़ावा देना था। प्रतिनिधिमंडल ने सूफी दरगाह अजमेर शरीफ, जहाँ हजरत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (र.अ) का मजार है, पर विशेष ज़ियारत की। हजरत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (र.अ) को पूरी दुनिया में उनके बिना भेदभाव प्रेम और मानवता की सेवा के संदेश के लिए जाना जाता है। इस अवसर पर हाजी सैय्यद सलमान चिश्ती ने चिश्ती सूफी सिलसिले के शाश्वत मूल्यों पर प्रकाश डाला, जो दरगाह शरीफ की प्रमुख आध्यात्मिक शिक्षाओं का प्रतिबिंब हैं सभी से प्रेम करो, किसी से द्वेष नहीं। साथ ही उन्होंने प्रार्थना, ध्यान और सेवा को जीवन जीने के महत्वपूर्ण स्तंभ बताया। हाजी सैय्यद सलमान चिश्ती ने प्रतिनिधिमंडल के समक्ष सूफी शिक्षाओं की आध्यात्मिक गहराई को साझा किया, जिसमें ज़िक्र अल्लाह (ईश्वर का स्मरण) और फि क्र (गहन ध्यान) के महत्व को रेखांकित किया, जो सूफी आध्यात्मिक साधनों का मूल हैं। इन प्रथाओं के माध्यम से, व्यक्ति ईश्वर से गहरा संबंध स्थापित करता है, करुणा, निस्वार्थता और मानव कल्याण के प्रति ज़िम्मेदारी को विकसित करता है। उन्होंने खिदमत (सेवा) की चिश्ती परंपरा की प्रतिबद्धता पर भी चर्चा की और बताया कि सच्ची आध्यात्मिकता मानवता की सेवा में प्रकट होती है। सबसे उच्च प्रकार की इबादत मानवता की सेवा है,हाजी सैय्यद सलमान चिश्ती ने कहा और ख़्वाजा गरीब नवाज (र.अ) के संदेश को दोहराया, जिन्होंने अपना जीवन दूसरों के दुखों को दूर करने और शांति का संदेश फैलाने में समर्पित किया। हाजी सैय्यद सलमान चिश्ती ने अपने संदेश में आगंतुकों को याद दिलाया कि दरगाह अजमेर शरीफ सार्वभौमिक प्रेम और करुणा का प्रतीक है, जो सीमाओं से परे जाकर साझा आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से मानवता को एकजुट करता है। उन्होंने उनके दौरे के लिए गहरी आभार प्रकट की और कहा कि इस तरह के आदान-प्रदान आपसी सम्मान, सद्भाव और वैश्विक शांति के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मिशन शक्ति के अन्तर्गत जिला प्रशासन व जिला पर्यटन एवं संस्कृति परिषद द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

जिला सूचना अधिकारी श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह एवं व्यापारी नेता श्री सतीश अग्रवाल ने किया दीप प्रज्जवलित कर किया कार्यक्रम का शुभारम्भ

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

सांस्कृतिक विभाग उत्तर प्रदेश के निदेर्शानुसार मिशन शक्ति के अन्तर्गत शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर जिला प्रशासन व जिला पर्यटन एवं संस्कृति परिषद द्वारा सनातन धर्म मंदिर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला सूचना अधिकारी श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह एवं व्यापारी नेता श्री सतीश अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का पूर्ण विधि विधान से शुभाम्भ किया गया। कार्यक्रम में संगीत शिक्षा केन्द्र की संचालिका श्रीमती मुक्ता वार्ष्णेय एवं श्रीमती दामिनी गुप्ता एवं अनन्या डॉस अकेडमी के कुशल

नेतृत्व में अनेक सांस्कृतिक नृत्य, गायन, भजन कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री गणेश वन्दना व मां सरस्वती की वन्दना से किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में भक्तजन उपस्थित रहें। बाल एवं युवा कलाकारों की मनमोहन एवं आनन्दमयी प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। तालियां की गूंज व माता रानी के जयकारों से पूर्ण मंदिर परिसर गुंजामान हो गया। श्री निर्दोश खटाना, श्री अमित गोयल, श्री जगदीश मदान, श्री आदित्य अग्रवाल, श्री पवन, डॉ.सागर, डॉ.अरूण, श्री नितिन, श्री सतीश अग्रवाल, डॉ.महेश, श्री अमितेश जैन, श्री गौरव रूहेला सहित सैकड़ों की संख्या में गणमान्य उपस्थित रहे।

क्राईम ब्रान्च पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद व थाना इन्दिरापुरम पुलिस द्वारा लूट करने जा रहे अन्तर्राज्यीय गिरोह के 03 शातिर अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से अवैध असलहा व चोरी की मोटर साईकिल बरामद

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

थाना इन्दिरापुरम पुलिस द्वारा लूट की घटना को अंजाम देने जा रहे अन्तर्राज्यीय गिरोह के 03 शातिर लुटेरों को थाना इन्दिरापुरम क्षेत्र से गिरफ्तार करने में महत्तवपूर्ण सफलता हासिल की गयी, गिऱफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से 04 अदद पिस्टल .32 बोर, 03 जिन्दा कारतूस .32 बोर व चोरी की मोटर साइकिल बरामद हुई। पूछताछ पर अभियुक्त कृष्णकान्त उर्फ श्याम ने बताया कि वह बी0एस0सी0 तृतीय वर्ष मे है पिछले करीब 02 वर्षो से इसका मेल-जोल अपराधिक प्रवृत्ति के लोगो से हो गया जिनके साथ मिलकर लूट आदि की घटनाऐं कारित करने लगा। जिसमें पिछले वर्ष नोएडा व अलीगढ के कई थानो से जेल जा चुका है जेल से छूटने के बाद पुनः अपना गिरोह बनाकर अलीगढ, गाजियाबाद व दिल्ली एन0सी0आर0 में चोरी व लूट की घटनाऐं करने लगा। अभियुक्त विशाल ने पूछने पर बताया कि वह बी0ए0 पास है नौकरी न मिलने व खर्चे अत्यधिक होने के कारण गलत शोहबत में पड गया। पिछले 02 वर्षो से कृष्णकान्त उर्फ श्याम से दोस्ती हो गयी और उसके साथ चोरी व लूट की घटनाऐं कारित करने लगा। अभियुक्त हर्ष सैनी ने

बताया कि वह भी बी0ए0 पास है और कृष्णकान्त उर्फ श्याम व विशाल का दोस्त है पूर्व में थाना अतरौली से बलात्कार के अभियोग में जेल जा चुका है जेल से छूटने के बाद अपने साथियों के साथ अवैध असलहे की तस्करी व लूट करने लगा। सभी अभियुक्तों ने बताया कि वह तीनों आपस में काफी अच्छे दोस्त है ये लोग आधुनिक जीवन शैली जीना चाहते है परन्तु इनके पास आमदनी का कोई जरिया नही है इस कारण ये लोग अपने शौक पूरे करने की चाहत मे लूट की वारदातें करने लगे, जिसमें पहले इन्होने अलीगढ मे लूट की उसके बाद नोएडा, गाजियाबाद व दिल्ली एन0सी0आर0 में लूट करने लगे। अभियुक्त हर्ष की दोस्ती परवेश पचौरी निवासी अलीगढ से थी जो अवैध असलहों की तस्करी का काम करता था, इन्होने परवेश पचौरी से असलहे लेकर पहले 2 से 5 हजार रुपए मुनाफे पर बेचने का काम किया तथा उसके बाद अपने पास असलहे रखकर राह चलते लोगो से डरा- धमकाकर लूट करने का काम करने लगे। लूट करने के लिए चोरी की मोटर साइकिल का इस्तेमाल करते थे जिससे यदि कहीं पकडे जाने का खतरा हो तो मोटर साइकिल छोडकर भाग जाये। लूट मे इन्हे जो भी पैसा मिलता था वह ये सब आपस में बराबर-बराबर बाँट लेते थे और उन पैसों से अपने खर्चे व शौक पूरे करते थे। आज ये लोग गाजियाबाद में चोरी की मोटर साइकिल मय असलहों के लूट करने के इरादे से आये थे और पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। पूछताछ पर इस गिरोह के अन्य साथियों व असलहे खरीदने-बेचने वालो के सम्बन्ध में महत्तवपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुई है जिनके आधार पर टीम बनाकर गिरफ्तारी व बरामदगी हेतु कार्यवाही की जा रही है।गिरफ्तार अभियुक्त .कृष्णकान्त रावत उर्फ श्याम पुत्र जगवीर सिह निवासी बुल्लापुर थाना पाली मुकीमपुर जनपद-अलीगढ उम्र करीब 20 वर्ष 2.विशाल पुत्र राजकुमार उर्फ राजपाल निवासी ग्राम खेडिया दोखल थाना पाली मुकीमपुर जनपद-अलीगढ उम्र करीब 20 वर्ष 3.हर्ष सैनी पुत्र राकेश सैनी निवासी मौहल्ला सराय देवीदास थाना अतरौली जनपद-अलीगढ उम्र करीब 22 वर्ष

बरमादी

1.पिस्टल .32 बोर मय मैगजीन - 04 अदद.जिन्दा कारतूस .32 बोर- 03 अदद,घटना मे प्रयुक्त मोटर साइकिल सीबी शाईन रंग सिल्वर ग्रे झ 01 अदद (थाना सिहानीगेट से चोरी) आपराधिक इतिहास,अभियुक्त कृष्णकान्त उर्फ श्याम के विरूद्ध अलीगढ मे 05, गौतमबुद्धनगर मे 01 व गाजियाबाद मे 02 कुल 08 अभियोग पंजीकृत है। 2.अभियुक्त विशाल के विरूद्ध अलीगढ में 01 व गाजियाबाद में 02 कुल 03 अभियोग पंजीकृत है। अभियुक्त हर्ष सैनी के विरूद्ध अलीगढ में 01 व गाजियाबाद में 02 कुल 03 अभियोग पंजीकृत है।

लोनी में गौरक्षकों की टीम ने बीमार नन्दी मजराज को एम्बुलेंस से भिजवाया अस्पताल

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

लोनी में अलग अलग जगहों से बीमार गौवंश की सूचना पर पहुंची गौरक्षकों की टीम ने घायल, बीमार गौवंशो को प्राइवेट एम्बुलेंस बुलाकर अस्पताल भिजवाया। पहली सूचना लोनी की रामविहार कॉलोनी से मिली कि यँहा एक नन्दी महाराज को किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मारकर घायल कर दिया है। सूचना पर गौसेवक मोहन आर्य और उनकी टीम पहुंची। उन्होंने एम्बुलेंस बुलाकर नन्दी महाराज को एम्बुलेंस से अस्पताल भिजवाया। दूसरी सूचना लोनी की खन्ना नगर कॉलोनी से भाजपा जिला उपाध्यक्ष रवि धामा को मिली कि यँहा एक छोटा नन्दी महाराज घूम रहा है जिनकी आंख में चोट लग गयी है। और बुरी तरह घायल है। उन्होंने भी गौसेवक मोहन आर्य की सहायता से एम्बुलेंस बुलवाकर छोटे नन्दी महाराज को अस्पताल भिजवाया। उस समय गौरक्षकों की पूरी टीम व दर्जनों कॉलोनी वासी साथ रहे।

महिला ने रोडवेज बस में बच्चे को दिया जन्म, एंबुलेंस कर्मचारी की खूब हो रही सराहना

संस्कार उजाला

गाजियाबाद में एक रोडवेज बस में एम्बुलेंस कर्मचारियों ने एक महिला की सुरक्षित प्रसव में मदद की। महिला ने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। यह घटना इंदरगढ़ी बस स्टैंड पर हुई। एम्बुलेंस कर्मचारियों ने बस में ही महिला को प्रसव कराया। इसके बाद महिला और नवजात शिशु को संजय नगर जिला अस्पताल ले जाया गया।

शंकरपुर चौराहा पर JD IDZone ,common service Center हुआ उद्घाटन

ई-आवेदन के लिए अब ग्रामीणों को शहर के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

नानपारा बहराइच शंकरपुर चौराहा पर JD IDZone CSC common service Center क्या हुआ उद्घाटन JD IDZone CSC का सै0अनीस अहमद व डॉ0सै0अब्दुल खबीर ने फीता काटकर किया उद्घाटन केन्द्र संचालक जुनेद अहमद ने बताया कि ई-आवेदन के लिए अब ग्रामीणों को शहर के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे इसका पता मसज़िद वाली गली निकट पुलिस चौकी शंकरपुर चौराहा बहराइच JD IDZone CSC उन्होंने बताया कि यहां पर खसरा खतौनी व सरकारी योजनाओं के लिए आवेदन की सुविधा पैन कार्ड, आय प्रमाण पत्र निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, पासपोर्ट, किसान सम्मन निधि, फोटो स्टेट, लेमिनेशन, ड्राइविंग लाइसेंस, सभी प्रकार की ऑनलाइन सुविधा मिलेगी JD IDZone CSC खुल जाने से ग्रामीणों में खुशी की लहर है इस मौके पर पत्रकार मोहम्मद इरशाद हुसैन,डा0 मोहम्मद रजा, डा0अंकित कुमार विश्वकर्मा,सै0अब्दुल कलीम सैफ, डा0असद खान, रियाज,डॉ0फैजान, डा0जावेद खान,अजहर सय्यद तालिब हुसैन,संजय ओझा,अहमद रजा,अजय विश्वकर्मा,सुरेश विश्वकर्मा,मोनू भाई,सय्यद स्लाहुद्दीन,सुहैल खान सय्यद तालिब हुसैन,मोहम्मद इस्माईल,आमिर हुसैन,हारून खान आदि तमाम लोग मौजूद रहे

श्री तुलसी नारायण मंदिर ट्रस्ट मे हुई देव स्थापना, निकली भव्य कलश यात्रा

संस्कार उजाला

नोएडा! सेक्टर 62 टेलीकॉम सिटी अपार्टमेंट में भव्य मंदिर श्री तुलसी नारायण मंदिर ट्रस्ट का निर्माण के बाद प्राण प्रतिष्ठा किया गया जिसमें राम दरबार और शिव परिवार का प्राण प्रतिष्ठा हुआ` भव्य कलश यात्रा निकालकर देव भ्रमण पुरे नगर मे हुआ, यज्ञ और प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रसाद वितरण हुआ ` श्री तुलसी नारायण मंदिर के निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा मे मुख्य कार्यकारिणी सदस्य उमेश प्रसाद वर्मा, सुरेश चंद्र वर्मा, भगवान शर्मा, घनश्याम दास गर्ग, दीपक शर्मा, डीके शर्मा एवं समिति के सहयोग रहा और इन सब के सामूहिक प्रयास से श्री तुलसी नारायण मंदिर का निर्माण कार्य संपन्न हुआ` कलश यात्रा मे विधायक पंकज सिंह के भाई जेपी सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज गुप्ता, महामंत्री उमेश त्यागी, गणेश जाटव, डिंपल आनंद, उमेश यादव, पूर्व विधायक उमेश मलिक, युवा मोर्चा उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र चौहान, मंडल प्रभारी पूनम सिंह, मंडल अध्यक्ष सत्यनारायण महावर ,

मंडल सह प्रभारी अशोक मिश्रा, सुनीता मिश्रा, सेक्टर 62 RWA अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, डॉ अनिल त्यागी, सत्येंद्र सिंह, बलवंत सिंह, डॉ निर्दोष, प्रफुल्ल पांडेय, हरीकिशोर, अनिमेष सिंह, राजेश शर्मा, हिमांशु सिंह, राम कुमार शर्मा , राकेश त्रिपाठी , नंद किशोर आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

नेहा टीवीएस शो रूम का उद्घाटन

कैसरगंज में टीवीएस की बेहतरीन सुविधा का आगाज, सुलभ यातायात की दिशा में नया कदम : सुभाष त्रिपाठी

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

कैसरगंज बहराइच कैसरगंज स्थित गुथिया मोड़ के निकट टीवीएस के नये शो रूम नेहा टीवीएस का उदघाटन मुख्य अतिथि विधायक पयागपुर सुभाष त्रिपाठी व विशिष्ट अतिथि ब्लाक प्रमुख कैसरगंज सन्दीप सिंह विसेन ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया।इस अवसर पर जनपद बहराईच से सम्बन्धित बड़ी संख्या में राजनैतिक, सामाजिक, प्रबुद्धजन एवं गणमान्य उपस्थित थे। उद्घाटन के मौके पर अतिथियों का स्वागत शो रूम के संचालक वरिष्ठ पत्रकार व समाजसेवी बच्चे भारती व अदनान रहमान ने बुके देकर, माला और अंगवस्त्र पहनाकर किया। शोरूम उद्घाटन के मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक पयागपुर सुभाष त्रिपाठी ने कहा कि कैसरगंज में टीवीएस की बेहतरीन

सुविधा का आगाज हुआ है जो कि सस्ती व सुलभ यातायात की दिशा में नया कदम साबित होगा। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित ब्लॉक प्रमुख कैसरगंज संदीप सिंह विसेन ने कहा कि कैसरगंज जैसे कस्बे में टीवीएस की सुविधा अन्य कंपनियों के साथ ही साथ अपने नए कलेवर में ग्रामीण व कस्बे वासियों को लुभाएगी तथा उन्हें सरल व सुलभ दामों में बेहतरीन यातायात सुविधा का नया अनुभव करायेगी। विधायक कैसरगंज आनंद यादव ने बहराइच के वरिष्ठ पत्रकार व शोरूम के प्रोपराइटर बच्चे भारती को अपने क्षेत्र में इस सुविधा को उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि टीवीएस के टू व्हीलर शहरी के साथ-साथ ग्रामीण लोगों के लिए भी बहुत सुलभ व मजबूत है इस बेहतरीन सुविधा के लिए कैसरगंज जैसे कस्बे के चयन के लिए निश्चित ही बच्चे भारती जी बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर विशिष्ट विधायक कैसरगंज आनन्द यादव, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विजय कुमार सिंह रैकवार, पूर्व जिला पंचायत सदस्य सय्यूब अली, भाजपा युवा नेता निशंक त्रिपाठी, मयंक त्रिपाठी, पूर्व ब्लाक प्रमुख शलभ खन्ना, कान्टैक्टर बकाउल्ला, दिलशाद अहमद एडवोकेट, के.एम.तिवारी एडवोकेट, पूर्व प्रधान लबी मुजीब प्यारेपुर, भाजपा मण्डल अध्यक्ष कृष्ण पाल सिंह, पूर्व जिला पंचायत सदस्य हाजी वसीम शेरवानी, शमीम अहमद एडवोकेट, अरशद रईस, मौलाना हाजी रईस, मौलाना खालिद, मौलाना सलाहउद्दीन, हाफिज अबरार, मशकूर अली, मौलाना अखलाक, राम सिंह प्रधान, अजय सिंह प्रधान, सपा नेता हाजी अब्दुल मन्नान, महामन्त्री ईंट भट्ठा यूनियन मो. अब्दुल्ला , समाज सेवी राज सिंह,हैदर अली, सेवा क्लब समाजसेवी डा.वी.पी.सिंह, पत्रकार मनीष मल्होत्रा पी.टी.आई, ताहिर हुसैन न्यूज 18, मनीष श्रीवास्तव, नजीब अहमद, विनोद तिवारी, अनुराग पाठक, मो.आमिर, शुभम सिंह, मो0 मशकूर ,कमाल अहमद, नूर यजदा, समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

देवी मां शेरावाली ने शस्त्र विद्या सीखकर राक्षस भैरव का वध किया। अश्विनी बत्रा

संहिता जन सहायक चैरिटेबल ट्रस्ट वैदिक रीति से अपना जन्मदिवस मनाकर बहुत प्रसन्न हुई

संस्कार उजाला

रिपोर्ट: रविन्द्र आर्य

गाजियाबाद: दुर्गा अष्टमी नवरात्रि के पावन अवसर पर आर्य समाज वैदिक मंदिर चंद्रपुरी गाजियाबाद में कन्या पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बाल बालिकाओं को यज्ञ के माध्यम से सच्चे सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा दी गई। आर्य समाज संस्थान के मंत्री अश्विनी बत्रा ने बताया कि देवी मां शेरावाली ने अपने वास्तविक रुप स्वरूप का मतलब बालकों को बताया कि किस प्रकार काम वासना में डूबे भैरव, देवी मां शेरावाली को धोखा देकर संभोग की इच्छा रखे हुआ था और फिर किस प्रकार देवी मां ने गुफा में शस्त्र विद्या सीखकर राक्षस भैरव का वध किया। उसी प्रकार आज भी बालिकाओं को शस्त्र

चलाना सीखना चाहिए और शस्त्रों की सहायता से अपने साथ दुर्व्यवहार करने वाले का नाश करना चाहिए। योग क्षेम संस्थान के संस्थापक राकेश शर्मा ने वैदिक यज्ञ का महत्व बताते हुए कहा कि यज्ञ से न केवल वातावरण शुद्ध होता है बल्कि हमारी बुद्धि का भी विकास होता है, इसलिए वैदिक यज्ञ अवश्य करना चाहिए। आर्य समाज के प्रधान राजेंद्र अग्रवाल ने भी देशभक्ति के गीत गाकर बच्चों को देशभक्ति का संदेश दिया और कहा कि हमें एकजुट रहना है और जातियों में नहीं बंटना है, तभी हम देश की रक्षा कर सकते हैं। संहिता जन सहायक चैरिटेबल ट्रस्ट की अध्यक्ष नीतू चौधरी का जन्मदिवस भी यज्ञ करके और हवन में आहुतियां देकर तथा जन्मदिवस के विशेष वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके मनाया गया। सुदिनं शुदिनं जन्मदीनां तव, भवतु मंगलं जन्मदीनां विजयी भव सर्वत्र सर्वदा, भवतु मंगलं जन्मदीनां वैदिक रीति से अपना जन्मदिवस मनाकर वह बहुत प्रसन्न हुई, उसने प्रण लिया कि भविष्य में वह अपना और अपने स्कूली बच्चों का भी जन्मदिवस वैदिक यज्ञ करके ही मनाएगी। पुजारी पं. राज कुमार शास्त्री ने स्वस्ति वाचन करके आशीर्वाद दिया और वरिष्ठ लोगों ने पुष्प वर्षा कर कहा ञ्जीवेम शरद शतं भूयश्च शरद शतत इस अवसर पर लगभग 50 बालक-बालिकाओं ने बड़े उत्साह के साथ वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया तथा वातावरण देशभक्ति के नारों से गूंज उठा। भोजन प्रसाद वितरण के पश्चात देशभक्ति के नारों के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम में राकेश शर्मा, डॉ. ओपी अग्रवाल, डॉ. चारु गर्ग, राजेंद्र अग्रवाल, अनिल गुप्ता, अश्विनी बत्रा, रविंद्र आर्य, सुनील वार्ष्णेय, राकेश गोयल, राकेश गुप्ता, पलक गर्ग, निशा राणा, ज्योति चौधरी व स्वाति के अलावा दयानंद बाल विद्यालय के शिक्षकगण व अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। लेखक रविंद्र आर्य 9953510133

संक्षिप्त डायरी

गाज़ियाबाद इनर व्हील क्लब गोल्फ लिंक्स ने किया दूसरे इनर व्हील चौक का उदघाटन।

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

इस क्लब ने राज नगर के एक पॉश एरिया सेक्टर १० के सौंदर्यीकरण की जिम्मेदारी ली . इनर व्हील ब्रांडिंग की को चेयर पर्सन अलका अग्रवाल ने बताया कि उनका सपना एक चौक बनाने का था जबकि अब एक के बाद एक चौक बनाने का अवसर मिल रहा है जिसके लिये उन्होंने पार्षद प्रवीण त्यागी का धन्यवाद किया । व्हील के चारो तरफ सोशल मैसेजेज भी दिये गये हैं . ईस मेगा प्रोजेक्ट का उद्घाटन डिस्ट्रिक्ट ३०१ की चेयरमैन मनीषा कौशिक जी और प्रमोशन ब्रांडिंग मीडिया कमेटी चेयर पर्सन अनीता जैन ने किया . प्रोजेक्ट मै क्लब प्रेसिडेंट् और मेंबर्स मौजूद रहे .

रामलीला मैदान में रावण, कुम्भकरण एवं मेघनाद के पुतले लगाये गये

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

श्री धार्मिक रामलीला समिति (पंजी) कविनगर द्वारा आयोजित रामलीला महोत्सव 2024 के अन्तर्गत आयोजन के 13वें दिन सम्पूर्ण रामायण का मंचन देखने रामभक्तों का अपार जनसमूह रामलीला मैदान, कविनगर में पहुंचा। इंडियन रिवाईवल ग्रुप द्वारा सम्पूर्ण रामायाण का मनोरम मंचन जिसमें रामजन्म से लेकर रावण वध तक की लीला से सभी का मन मोहन रही है। गाजियाबाद ही नहीं अपितु पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं अन्य निकटवर्ती स्थानों से भारी संख्या में लोग रामलीला मंचन देखने पहुंच रहे हैं। समिति द्वारा रामलीला मंचन देखने की निःशुल्क व्यवस्था की गयी है। समिति द्वारा लगायी गयी रामचरित मानस प्रदर्शनी सभी के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है जिसमें 52 विभिन्न भाषाओं में देशी एवं विदेशी रामायण संकलित की गयी हैं। मंचन प्रारम्भ होने से पूर्व समिति द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मेला परिसर में आज नगर वासियों ने विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाया। कुंज कैटरर्स की व्रत की थाली, चाट, फत्ते की कचौड़ी, अग्रवाल कैटरर्स की मारवाडी थाली का स्वाद सभी को आकर्षित कर रहा है। आज मुख्य अतिथियों में एन०एच०ए०आई० के चेयरमैन संतोष यादव, विधायक अजीत पाल त्यागी, एम०एल०सी० दिनेश गोयल, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेन्द्र कुमार कश्यप, क्षेत्रीय अध्यक्ष भाजपा सतेन्द्र शिशौदिया आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। समिति के अध्यक्ष ललित जायसवाल, महामंत्री भूपेन्द्र चोपड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर मंत्री गुलशन बजाज, अजय जैन, गौरव चोपड़ा, विवेक मित्तल, तरूण चौटानी, नवेन्दु सक्सेना, बलदेव राज शर्मा, सुरेश महाजन, विजय ढींगरा, ऋषि माकड़, संजय मित्तल आदि उपस्थित रहे।महामंत्री भूपेन्द्र चोपड़ा)

आश्विन शुक्ल दशमी को विजयदशमी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। रामलीला में जगह-जगह रावण वध का प्रदर्शन होता है। क्षत्रियों के यहाँ शस्त्र की पूजा होती है। इस दिन नीलकंठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। यह त्योहार क्षत्रियों का माना जाता है। इसमें अपराजिता देवी की पूजा होती है। यह पूजन भी सर्वसुख देने वाला है। दशहरा या विजया दशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। इस दिन राम ने रावण का वध किया था ।

बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व

दशहरा

दशहरा (विजयदशमी या आयुध-पूजा) हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

रामलीला मंचन

दशहरा अथवा विजयदशमी राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। देश के कोने-कोने में यह विभिन्न रूपों से मनाया जाता है, बल्कि यह उतने ही जोश और उल्लास से दूसरे देशों में भी मनाया जाता जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े,

बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारंपरिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर, लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं, जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहां दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। प्रथम दिन जिसे काछिन गादि कहते हैं, देवी से समारोहारंभ की अनुमति ली जाती है। देवी एक कांटों की सेज पर विरजमान होती हैं, जिसे काछिन गादि कहते हैं। यह कन्या एक अनुसूचित जाति की है, जिससे बस्तर के राजपरिवार के व्यक्ति अनुमति लेते हैं। यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसके बाद जोगी-बिठाई होती है, इसके बाद भीतर रैनी (विजयदशमी) और बाहर रैनी (रथ-यात्रा) और अंत में मुरिया दरबार होता है। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है। बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों,ओडिआ,और आसाम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरे बंगाल में पांच दिनों के लिए मनाया जाता है।ओडिशा और असम मे 4 दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं। त्योहार के दौरान शहर में छोटे मोटे स्टाल भी मिठाईयों से भरे रहते हैं। यहां षष्ठी के दिन दुर्गा देवी का बोधन, आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा आदि का आयोजन किया जाता है। उसके उपरांत सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन प्रातः और सायंकाल दुर्गा की पूजा में व्यतीत होते हैं।अष्टमी के दिन महापूजा और बलि भि दि जाति है। दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं, जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं, व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं, व सिंदूर से खेलते हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। तदनंतर देवी प्रतिमाओं को बड़े-बड़े ट्रकों में भर कर विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। विसर्जन की यह यात्रा भी बड़ी शोभनीय और दर्शनीय होती है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा विशेष उल्लेखनीय है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभा यात्रा का आनंद लेते हैं। इन द्रविड़ प्रदेशों में रावण-दहन का आयोजन नहीं किया जाता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारंपरिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं, जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं।

विजय पर्व

दशहरे का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिन जगदम्बा की उपासना करके शक्तिशाली बना हुआ मनुष्य विजय प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है। इस दृष्टि से दशहरे अर्थात विजय के लिए प्रस्थान का उत्सव का उत्सव आवश्यक भी है। भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो कारण से ही दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे। इस पर्व को भगवती के विजया नाम पर भी विजयादशमी कहते हैं। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुँचे थे। इसलिए भी इस पर्व को विजयादशमी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं। ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं (महत्त्वपूर्ण पदों पर पदासीन लोग) को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त दी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुनः बारह वर्ष का वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था तथा स्वयं वृहन्नला वेश में राजा विराट के यहँ नौकरी कर ली थी। जब गोरक्षा के लिए विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्रजी के लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्घोष किया था। विजयकाल में शमी पूजन इसीलिए होता है।

विजयदशमी पर पूजें शमी वृक्ष

भारत में प्रत्येक चेतन व अचेतन को सम्मान देते हुए उनका पूजन भी किया जाता है। इनमें वृक्ष-वनस्पतियाँ भी सम्मिलित हैं। जिस तरह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नीम, ज्येष्ठ पूर्णिमा वट सावित्री व्रत पर वट वृक्ष, सोमवती अमावस्या पर तुलसी, पीपल का, भाद्रमास की कुशग्रहिणी अमावस्या पर कुशा का और कार्तिक की आँवला नवमी पर आँवले के वृक्ष के पूजन का महत्व है, उसी प्रकार आश्विन शुक्ल दशमी (विजयदशमी) पर दो विशेष प्रकार की वनस्पतियों के पूजन का महत्व है। इनमें से एक है शमी वृक्ष, जिसका पूजन रावण दहन के बाद करके इसकी पत्तियों को स्वर्ण पत्तियों के रूप में एक-दूसरे को ससम्मान प्रदान किया जाता है। इस परंपरा में विजय उल्लास पर्व की कामना के साथ समृद्धि की कामना का रहस्य छुपा हुआ है। दूसरी वनस्पति है अपराजिता (विष्णु-क्रांता)। यह पौधा अपने नाम के अनुरूप ही पहचान देता है। यह विष्णु को प्रिय है और प्रत्येक परिस्थिति में सहायक बनकर विजय प्रदान करने वाला है। नीले रंग के पुष्प का यह पौधा भारत में सुलभता से उपलब्ध है। घरों में समृद्धि के लिए तुलसी की भाँति इसकी नियमित सेवा की जाती है। आयुर्वेद के अनुसार यह पौधा कफ विकारों को दूर करते हुए मासिक धर्म संबंधी समस्याओं के अलावा प्रसव पीड़ा निवारण में भी महत्व रखता है। तंत्र शास्त्र में युद्ध अथवा मुकदमेबाजी के मामले में यह उपयोगी है। विजयदशमी को दुर्गा पूजन, अपराजिता पूजन, विजय प्रयाण, शमी पूजन तथा नवरात्र पारण के महान कर्म हैं। क्लाइटोरिसाटरनेटिया डालकुलम प्रजाति का यह पौधा भगवान राम युग के पहले से ही व्यवहार में स्थापित है और विद्वानों ने इसका बहुत महत्व बताया है। विजयदशमी को प्रातःकाल अपराजिता लता का पूजन, अतिविशिष्ट पूजा-प्रार्थना के बाद विसर्जन और धारण आदि से महत्वपूर्ण कार्य पूरे होते हैं। ऐसी पुराणों में मान्यता हैं।

विजयदशमी अर्थात् अपराजिता पूजन

विजयदशमी का पर्व उत्तर भारत में आश्विन शुक्ल पक्ष के नवरात्र संपन्न होने के उपरांत मनाया जाता है। शास्त्रों में दशहरे का असली नाम विजयदशमी है, जिसे अपराजिता पूजा भी कहते हैं। नवदुर्गाओं की माता अपराजिता संपूर्ण ब्रह्मांड की शक्तिदायिनी और ऊर्जा उत्सर्जन करने वाली हैं। महर्षि वेद व्यास ने अपराजिता देवी को आदिकाल की श्रेष्ठ फल देने वाली, देवताओं द्वारा पूजित और त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) द्वारा नित्य ध्यान में लाई जाने वाली देवी कहा है। गायत्री स्वरूप अपराजिता को निम्नलिखित मंत्र से भी पूजा जाता है -

ओम् महादेव्यै च विह्माहे दुर्गायै
धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात।।
ओम् नमः सर्व हितार्थायै जगदाधार दायिके।
साष्टांगोष्प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।
नमस्ते देवी देवेशि नमस्ते ईप्सित प्रदे।
नमस्ते जगतां धातित्र नमस्ते शंकरप्रिये।।
ओम् सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत।
अतोष्हं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम।।

चारों युगों के आरंभ होने के समय से ही देवी अपराजिता के पूजन का भी आरंभ हुआ। कथा के अनुसार, देव-दानव युद्ध का काफी लंबा अंतराल बीत चुका था। नवदुर्गाओं ने दानवों के संपूर्ण वंश का नाश कर दिया। इसके बाद माता दुर्गा अपनी आदिशक्ति अपराजिता का पूजन करने के लिए शमी की घास लेकर हिमालय में अंर्तध्यान हो गईं और आर्य व्रत के राजाओं ने इस विजय को उत्सव के रूप में मनाते हुए विजयदशमी पर्व का आरंभ किया। उल्लेखनीय है कि उस वक्त विजयदशमी देवताओं द्वारा दानवों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में मनाई गई थी। इस युद्ध में देवताओं के साथ धरती के राजा दशरथ, जनक और शोणक ऋषि जैसे राजाओं ने भी अपना युद्ध कौशल दिखाया था। बाद में रामायण काल में राम का राज्याभिषेक हुआ, लेकिन इसी दौरान रावण एवं अन्य दानवों के अत्याचारों से धरती फिर अशांत हो गई। धरती के जीवों को उनसे बचाने के लिए राम को वनवास पर जाना पड़ा। वैसे, राम ने अपने बाल्यकाल से ही आर्यावृत पर घिरे हुए राक्षसों को एक-एक करके मारा। सबसे बड़े राक्षस रावण को मारने के लिए उन्हें जो श्रम करना पड़ा, उसका उल्लेख रामायण में मिलता है। राम-रावण युद्ध नवरात्रों में हुआ। रावण की मृत्यु अष्टमी-नवमी के संधिकाल में और दाह संस्कार दशमी तिथि को हुआ। इसके बाद विजयदशमी मनाने का उद्देश्य रावण पर राम की जीत यानी असत्य पर सत्य की जीत हो गया। आज भी संपूर्ण रामायण की रामलीला नवरात्रों में ही खेली जाती है और दसवें दिन सायंकाल में रावण का पुतला जलाया जाता है। इस दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि दाह के समय भदा न हो। रामायण काल के बाद दशहरा मूलतः राजाओं यानि क्षत्रिय राजाओं का त्योहार माना गया। इसे राजाओं के विजय उत्सव के रूप में देखा जाने लगा। वे युद्ध में विजयी होकर उत्सव के रूप में अपनी प्रजा के बीच पहुंचते थे। मैसूर में वहां के राजा की सवारी काफी प्रसिद्ध रही है। वह इस दिन हाथी पर बैठकर अपने महल से बाहर आते थे और दशहरा मैदान में मां अपराजिता की पूजा करते थे। राजाओं की परिपाटी समाप्त होने के बाद आज वहां के राज्यपाल इस परंपरा का निर्वहन करते हैं। इसी तरह, हिमाचल प्रदेश स्थित कुल्लू का दशहरा भी बहुत प्रसिद्ध है। यहां दशमी से अगले 15 दिन तक रोज वहां के भूतपूर्व राजा या उनके वंश को कोई व्यक्ति जनसभा में रावण दाह करके विजयदशमी का पूजन करता है। ऐसे ही सार्वजनिक उत्सव बनारस और इलाहाबाद में भी होते हैं। बंगाल में यह पूजन दुर्गा पूजा से ही जोड़ा जाता है। दुर्गा पूजा की महानवमी के बाद विजय दशमी के दिन कोलकाता समेत सारे बंगाल में मंदिरों में पंडाल सजते हैं और उत्सव मनाया जाता है। इसी दिन आदिशक्ति दुर्गा सहित काली पूजन और अपराजिता पूजन की रस्म भी निभाई जाती है। कुल मिलाकर, विजयदशमी बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस विजय के लिए देवी मां अपराजिता अपनी अपार शक्ति समय-समय पर शूरवीर राजाओं को प्रदान करती रहती हैं।

विजयदशमी का पर्व हमारी संस्कृति से जुड़ा है। अपार भीड़ खींचने वाली यह सांस्कृतिक परंपरा असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है। इस दिन लोग अपने घर और बाहर उस विजयपर्व का आनंद उठाते हैं, जिसका आरंभ हजारों साल पहले हुआ था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी -285, सेक्टर-11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक-महेश कुमार - 9911733939, कानूनी सलाह- नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011